तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ४ वर्ष १८ १५ फरवरी १९८२
दीवाना
देश की खुशहाली के लिए चिल्लियों की पैदावार बढ़ायें

परोपकारी

विक्की सुना है तुम अपनी पत्नी से तलाक लेना चाहते हो ?

जी हाँ, वह एकदम
है! मेरे माँ-बाप ने
मेरी शादी उससे कर

तुम तो पढ़े-लिखे हो, तुम अगर उसे पढ़ना-लिखना सिखाओ तो वह तुम्हारे लायक हो जाएगी! और फ़िर तलाक़ के लिए वक़ील-

-तुमसे हज़ार रुपए से कम नहीं लेगा!
मैंने जान बूझ कर रकम बढ़ा कर बताई है!
रुपए
यह

अगले दिन जेल में-
अरे विक्की! तुम यहाँ!!?

कल मुझे लगा कि हज़ार
बहुत ज़्यादा है! इसलिए
मैं काम निपटाने के लिए
२०० रु. एक बदमाश को
पत्नी का खून करवा

विश्व की 18 भाषाओं में करोड़ों की संख्या में बिकने वाली प्रसिद्ध अमरीकी लेखक 'रिप्ले' की मशहूर पुस्तक

Ripley's — Believe It or Not! -अब हिन्दी में भी

82

दुनिया का सबसे अनोखा भाषाविद
तरीम नामक एक भारतीय साधु, जो बद्रीनाथ के पास की एक गुफा में रहता है, केवल हिन्दी और अंग्रेजी जानता है किन्तु वह विश्व की 1000 भाषाओं में से किसी भी भाषा में पूछे गए प्रश्नों का मानसिक दूरबोधता (टेली पैथी) द्वारा उत्तर दे देता है.
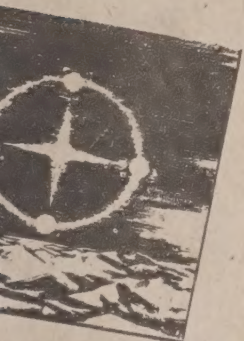
...त्र देश
...ंग-चू (चीन) के निकट प्रात:कालीन कुहरे ... उत्पन्न दृष्टि-भ्रम से आकाश में 5 सूर्य ...ते हैं.

...खुवण्ड किया गया
...ान्स शहर को राजभक्त होने के कारण ...कारी न्यायालय के आदेश से पूर्ण रूप से ...गया और इसके 35000 निवासियों को ... दिया गया.
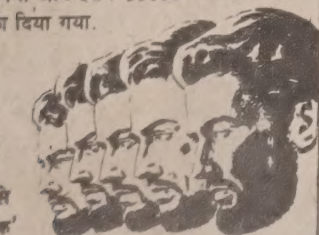
...लानपम्पमेन्ट, वन्स में एक ही शकल ... 5 भाइयों में प्रत्येक नामी मल्ल बना. ...र का नाम भी उस वर्च पर आधारित ...ए गए हैं.

मूल्य
प्रत्येक भाग—15/-
दोनों भाग सम्पूर्ण—25/-
डाकखर्च 4/-

दो भागों में प्रत्येक में 750 आश्चर्य

1500 आश्चर्यों में से कुछ की झलक
■ एक गीदड़—जिसने 12 वर्ष तक मनुष्यों पर राज्य किया. ■ एक ऐसा पेड़—जो हर शाम पानी की बारिश करता है. ■ एक समुद्री जीव—जिसका वज़न बचपन में 10 पौंड प्रति घंटे बढ़ता है. ■ एक आदमी—जिसने अपनी हथेली पर पौधा उगाया. ■ एक मनुष्य—जो अपनी दोनों हथेलियों पर दो आदमियों को बिठाकर 80 फीट तक ले गया. ■ क्या कोई जीव अण्डे के अन्दर होने पर भी बोलता है? ■ एक साधु—जिसे तोप में डालकर दो बार 800 फीट ऊँचा उछाला गया, मगर फिर भी जीवित रहा. ■ एक आदमी—जिसने 80 वर्ष की उम्र में शादी करके 10 बच्चे पैदा किए. ■ ऐसी झील—जिसका पानी हर 12 साल बाद बदलकर खारी-मीठा हो जाता है. कब?....कहां?...और कैसे? जानने के लिए पढ़िए.
संसार के 1500 अद्भुत आश्चर्य

संसार के 1500 अद्भुत आश्चर्य
VOLUME-I

जिसमें कुदरत के चमत्कार, अद्भुत ऐतिहासिक घटनाएं, बादशाहों की अजीबोगरीब सनकें, साहस और वीरता के बेमिसाल कारनामें, पृथ्वी, समुद्र और आकाश के जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों की अनजानी विचित्रताएं वर्णित हैं।

यह एक ऐसी दिलचस्प पुस्तक है

* जिसकी विचित्र कहानियां प्रत्येक घर-परिवार में, हर पार्टी व जश्न में, सभा समारोहों में हमेशा-हमेशा चर्चा का विषय बनी रहेंगी।
* जो कट-फट जाने पर भी, यदि उसका एक पृष्ठ भी कहीं पड़ा होगा, हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करेगा और वह उसे पढ़े बिना नहीं रह सकेगा।
* जो हर प्रतीक्षा व रिसेप्शन कक्ष में आपको रखी मिलेगी जैसे:—**हर डाक्टर के क्लीनिक पर --- हर होटल के रिसेप्शन पर --- हर वकील के प्रतीक्षा कक्ष में --- हर बारबर शॉप पर और हर ऑफिस के रिसेप्शन पर**
* रेल के लम्बे और उबा देने वाले सफ़र को मनोरंजक बनाएगी।
* जो बच्चों में पढ़ने की रुचि और लगन पैदा करेगी और मनोरंजन के साथ-साथ उनका ज्ञान वर्द्धन भी करेगी।

बनमानुष द्वारा महिला का अपहरण

1914 में फ्रांस के राष्ट्रपति की पत्नी का एक बनमानुष द्वारा अपहरण कर लिया गया और उसने उन्हें एक ऊँचे पेड़ की चोटी पर कई घंटे तक अपने कब्जे में रखा, लेकिन इस घटना को 40 वर्ष से अधिक समय तक छुपाए रखा गया।

ब्राजील के एक शहर—बेलम डो पारा में—पूरे वर्ष प्रतिदिन दोपहर 2 से 4 बजे के बीच वर्षा होती है.

व्यक्ति—जो लाश द्वारा मारा गया—
पेरिस में एक पिस्तौल द्वन्द्व में एक पक्ष द्वारा सिगनल मिलने से पहले ही गोली चला देने पर प्रतिपक्षी ढेर हो गया। किन्तु जब वह उसकी लाश के ऊपर झुका तो लाश की मांसपेशियों में एक ऐसी फड़कन हुई जिससे पिस्तौल चल गयी और दूसरे की भी मृत्यु हो गयी।

...बुक स्टाल एवं रेलवे तथा बस ...थल बुक स्टालों पर माग करें ...वी०पी० द्वारा मंगाने का पता।

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006
नया शो रूम: 10-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरिया गंज न. दिल्ली-110 002

लल्लू
अपने मुहल्ले में नयी लड़की आई है न जूली। मैंने सुना है वह अभिताभ बच्चन की फिल्में बहुत देखती है। मैं उसे इम्प्रैस करना चाहता हूं। उसके लिये तुम्हारी मदद चाहिये।
हम इसमें क्या कर सकते हैं?
वह अभिताभ बच्चन की मार कुटाई देखने जाती होगी। तुम दोनों गुंडों का भेष बना कर उसे छेड़ना, इतने में मैं आ जाऊंगा और तुम्हारी ऐसी ही पिटाई करके भगा दूंगा जैसे अभिताभ अपनी फिल्मों में करता है।

मूंछें, टी शर्ट और गले में साफे बांध कर लगते तो हम अच्छे खासे गुंडों जैसे हैं।
वहां हमें डायलाग क्या बोलने हैं?
शोले फिल्म के डायलाग बोलेंगे।

वह देखो वह जा रही है जूली! रोज़ शाम को इसी पार्क में अकेली सैर करने आती है। तुम दोनों जाओ और उसका रास्ता रोक लेना और गुंडागर्दी दिखाना। ऐन मौके पर मैं आ जाऊंगा और डिंशू डिंशू का नाटक शुरु।

रुक जा। बच कर कहां जायेगी।
हम काफी दिनों से इस मौके की तलाश में थे। ह ह ह ह ह ह
जरा भी शोर मचाया तो यह चाकू....

अब मुझे जाना चाहिये। मामला ठीक गर्म हो गया है।

क क्या हो गया?
हम तेरी ऐसी पिटाई करेंगे कि सारी उम्र याद रखेगा। तूने हमें मरवा दिया।
हमें पहले क्यों नही बताया कि जूली अपनी कालिज की जूडो कराटे चैम्पियन है।

if every thing
you wanted to know
about tv
seemed too complicated

has a beautiful answer

new arjun solid state
double shutter double speaker
sunmica cabinet

A-194, Okhla Industrial Area, Phase-1
New Delhi-110020.

राजा जी

कोई है कहां मर गये सब ?

राजा अपना बाजा बजा रहा है। जा तू। अकेले में डर रहा होगा।

भौंकने दो ! मैं कौन सा उससे डरता हूं ?

ज्यादा से ज्यादा एक साल की इंक्रीमेंट रुकवा देगा और क्या कर लेगा ?

दीवाना का अंक दो मिला। मुखपृष्ठ पर चिल्ली का गणतन्त्र दिवस पर नये रूप में यह नया अंदाज देख कर बहुत हँसी आयी। दीवाना की निरन्तर बढ़ती हुई मनोरंजक सामग्री को प्राप्त करके अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव होता है। जैसे गणतन्त्र व्यायाम, गणतन्त्र परेड की झलकियां आदि पढ़कर बहुत हँसी आई। अगर दीवाना में एक दो कविता भी छपने लगें तो अधिक बेहत्तर होगा। बाकी लल्लू, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल इत्यादि स्थायी स्तंभ सभी बहुत पसंद आए।

पंकज गर्ग – गाजियाबाद

दीवाना का मुख-पृष्ठ हर बार की तरह इस बार भी बेहतरीन रहा। गणतन्त्र दिवस की झलकियां भी रोचक रहीं तथा गणतन्त्र व्यायाम आकर्षक लगा। सिलबिल-पिलपिल लल्लू आदि ने भी काफी मनोरंजन किया. कुल मिला के पत्रिका अपने पूरे निखार पर पहुंच चुकी है।

जितेन्द्र खनेजा—बीकानेर

दीवाना का अंक दो प्राप्त हुआ। पढ़ते हुए दीवानों की तरह हँसता रहा। पत्रिका में मोटू-पतलू, सिलबिल पिलपिल लघु कथा 'वहीं के वहीं' तथा सवाल यह है ? जो लाजवाब है बहुत पसन्द आया। साथ ही 'लल्लू' और 'लल्ला की लवस्टोरी' ने दीवाना को रोचक बनाने में बहुत ज्यादा सहायता की।

आशा रखता हूँ आगे भी हर अंक एक दूसरे से अधिक रोचक-प्रकाशित होगा।

राजेन्द्र लाल बाङ्के—बिहार

एक बार दीवाना का अंक पढ़ा तो मैं इसका दीवाना बन गया। अब मैं हमेशा इस अंक को पढ़ता हूँ! यह बेहद ही रोचक और ज्ञानवर्द्धक होता है। आने वाले अंक का बेसब्री से इन्तजार है।

ईश्वर लाल संगतानी—
जोधपुर (राज०)

दीवाना अंक 2, 15 जनवरी पढ़ा। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इतनी मनोरंजक तथा हँसी से भरपूर पत्रिका का मूल्य केवल 1·50 रु०। है जबकि अन्य मैगजीन जिनमें आधे से ज्यादा पेज विज्ञापन के होते हैं मूल्य 2·50 से 4 रुपये तक हैं। कम पैसों में भरपूर मनोरन्जन के लिए बधाई। मुझको खुशी होगी अगर आप अपने मनोरन्जन की छुरी का व्यंग बाण डाक्टरों पर भी मारें। जैसे कि आन्ध्र में पेट के आपरेशन करते समय एक डाक्टर मरीज के पेट में कैंची ही भूल गया। कहीं एक डाक्टर आपरेशन करते वक्त दायीं की जगह बांईं आंख का आपरेशन कर गया।

बी० कु० श्रीवास्तव— लखनऊ

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष—किसी नयी योजना पर विचार, आय व्यय में समानता, नयी वस्तुओं की खरीद एवं विशेष व्यय होगा, कारोबार ठीक चलेगा और लाभ भी समय पर मिलता रहेगा।

वृष—यात्रा सफल, व्यय यथार्थ, हालात ठीक चलेंगे, लाभ खर्च बराबर, कुछ समस्याएँ सुलझेंगी, परन्तु धन की कमी किसी-किसी समय अधिक चिन्ता पैदा किया करेगी।

मिथुन—रुकावटों का सामना एवं परेशानी काफी रहेगी, लाभ-खर्च बराबर, कारोबार सुधरेगा, हालात भी आपके बश में चलेंगे, लाभ में वृद्धि, यात्रा सफल रहेगी।
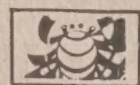
कर्क—लाभ यथार्थ पर व्यय अधिक होगा, कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, कारोबार ठीक पर लाभ पूरा न मिलेगा, स्वभाव में तेजी, यात्रा न करें, भाई से सहयोग।

सिंह—शत्रु या झगड़े आदि से परेशानी, लाभ में वृद्धि, मिश्रित फल मिलेंगे, किसी विशेष उलझन से छुटकारा पायेंगे, विरोधी सामना न कर सकेंगे, कारोबार भी सुधरेगा।

कन्या—यात्रा की आशा है, हालात ठीक चलेंगे, परिवार से सुख, नई वस्तुओं की खरीद, व्यर्थ की समस्याओं से घबराहट, व्यय कुछ बढ़ेगा, खरेलू कामों में व्यस्तता।

तुला—यात्रा पर न जायें, सेहत खराब, परेशानी अकारण ही होगी, आर्थिक लाभ अच्छा होगा एवं काम-काज में भी सुधार होता जाएगा, परिश्रम काफी करना पड़ेगा।

वृश्चिक—व्यय अधिक, कोई विशेष सूचना मिलने से यात्रा भी हो सकती है, कारोबार पहले जैसा हो, झगड़े आदि से बचें, खर्चे पर नियंत्रण जरुरी है वर्ना तंगी आ सकती है।

धनु—समय अच्छा गुजरेगा, नई वस्तुओं की खरीद, मनोरंजन पर व्यय, परिश्रम द्वारा कठिन काम भी सुगमता से बन जायेंगे, यात्रा सफल, लाभ आशानुसार मिलेगा।

मकर—कारोबार ठीक चलेगा, हालात भी सुधरते जायेंगे, विशेष सूचना मिलेगी, खर्चा बढ़ेगा, यात्रा हो सकती है, सफलता देर से मिलेगी, कारोबार बढ़ेगा, अधूरा काम बनेगा।

कुम्भ—काम रुक-रुक कर बनेंगे, यात्रा के लिए दिन ठीक नहीं, कारोबार सुधरेगा, हालात भी ठीक चल पड़ेंगे, लाभ-खर्च बराबर, नातेदारों से मेल-जोल, परिश्रम से सफलता।

मीन—आय में वृद्धि, सफलता कुछ देर से मिलेगी, संघर्ष काफी रहेगा, यात्रा न करें, कारोबार पहले जैसा ही, मित्र सहयोग देंगे, लाभ देर से मिलेगा, विशेष व्यय

मुख्य पृष्ठ पर

मत मानो सरकार का
कहना मेरे भाई
बात मा[illegible]ो मेरी एक
इसमें [illegible] सब की है भलाई
चाहो अगर तुम देश को
रहे समृद्ध और खुशहाल
दिन दुगनी और रात चौगुनी
बढ़ाओ चिल्लियों की पैदावार

दीवाना

अंक : ४ वर्ष : १८ १५ फरवरी १९८२

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

असली कौन नकली कौन ?

आमतौर पर देखा जाता है कि लोग अपना पूरा नाम कभी नहीं लिखते हैं. नाम का पहला अक्षर लिख कर उप नाम लिख देते हैं. जैसे राधा कृष्ण झा को हिन्दी में 'रा. कृ. झा' लिखते हैं. अंग्रेजी में 'आर. के. झा' लिखा जाता है. हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी में लिखना सुविधाजनक माना जाता है. इसलिए लोग खास कर अंग्रेजी में ही लिखना पसंद करते हैं.

सिर्फ नाम का पहला अक्षर और उपनाम लिखने की वजह से कभी-कभी मुसीबतें भी पैदा हो जाती हैं. सब से बड़ी मुसीबत वाली बात तो यह है कि नाम का पहला अक्षर और उपनाम अगर कई व्यक्तियों के नामों और उपनामों से मिलता हो, तो मुसीबत ही मुसीबत.' उदाहरण के लिए—'आलोक कुमार गुप्ता,' 'अशुतोष कुमार गुप्ता,' 'अशोक कुमार गुप्ता,' 'अरुण कुमार गुप्ता', 'अनिल कुमार गुप्ता,' 'अजय कुमार गुप्ता,' 'आनन्द कुमार गुप्ता,' वगैरह-वगैरह. नाम दूसरे-दूसरे हैं. पर एक-एक अक्षर लिखा जाये तो एक ही आदमी का नाम बोध होता है. जैसे—'अजय कुमार गुप्ता' का 'ए. के. गुप्ता' लिखा जाता है. वैसे 'अशोक कुमार गुप्ता' का भी 'ए. के. गुप्ता' होता है.

मैं जब डाकखाना में डाकिया की नौकरी में मुकर्रर किया गया तो मेरे ऊपर नाम की एकाक्षरी और उपनाम की वजह से कई-कई मुसीबतें आ पड़ी थीं. नयी नौकरी. नयी जगह और मैं बिलकुल नया था. लोग न तो मुझे जानते थे. न तो पहचानते थे. न ही मैं लोगों को जानता-पहचानता था.

जिस दिन मैं नौकरी में मुकर्रर हुआ. उस के दूसरे दिन से ही मुझे एक मोहल्ला में चिट्ठी—पत्री बांटने भेज दिया गया. नौकरी का पहला दिन में तो खास गड़बड़ी नहीं हुई. दरअसल उस मोहल्ला के लिए खास मैं नया डाकिया था. नया आदमी के लिए अनजान जगहों में कैसी मुसीबतें होती हैं, इसे उस मोहल्ला के लोग अच्छी तरह जानते थे. इस लिए मेरे मोहल्ला में पहुंचते ही लोग एक-एक कर मेरे करीब इकट्ठे हुए और अपनी-अपनी चिट्ठी पत्री लेते चले.

दूसरे, तीसरे चौथे और पांचवें दिनों में चीखते-चिल्लाते. पूछते-पुकारते चिट्ठियां बांटने लगा. इस तरह चार-पांच दिनों में ही लोग जान गए कि मैं चिट्ठियां बांटने में गड़बड़ियां नहीं कर रहा हूं, तो वे अपने-आप में आश्वस्त हुए. जिस के नाम चिट्ठी होती, उसी घर में डाल देता और चला जाता. चिट्ठियां बांट लेने के बाद हौटल में जा कर आराम फरमाता. चाय की चुस्कियां ले-ले कर मन ही मन सोचता, भगवान का बहुत-बहुत शुक्र है कि उसने आराम देह नौकरी दिलवा दी.

एक दिन उस मोहल्ला के ठिकाने पर ए. के. गुप्ता के नाम से एक चिट्ठी थी. चिट्ठी ले कर मोहल्ला में ए. के. गुप्ता के बारे में पूछताछ की तो कोई भी ए. के. गुप्ता के बारे में बता न सका. अंततः एक महिला मिली. मैंने महिला से पूछा, 'इस मोहल्ला में ए. के. गुप्ता किस का नाम है?''

महिला ने पूछा—'पूरा नाम क्या है?''

मैं बोला. ''लिफाफा में तो सिर्फ ए. के. गुप्ता लिखा हुआ है. खैर, आलोक कुमार गुप्ता, अशुतोष कुमार गुप्ता, अजय कुमार गुप्ता, अरुण कुमार गुप्ता, अशोक कुमार गुप्ता, आनंद कुमार गुप्ता वगैरह-वगैरह नामों में आप किस को जानती हैं?''

महिला ने 'ना' में सिर हिला कर कहा, 'नहीं-नहीं ऐसे नाम मुझे मालूम नहीं. आगे चल कर पूछ लीजिए.''

ए. के. गुप्ता के बारे में पूछते-पूछते एक बुजुर्ग आदमी अखबार पढ़ते दिखाई पड़े. उन्हें देखकर मैं ने सोचा ये जरूर बता पायेंगे. उनके करीब आ कर पहले मैं ने उन्हें नमस्कार किया. बाद में पूछा—'हजूर, ए. के. गुप्ता किस का नाम है?''

ए. के. गुप्ता का नाम सुन कर बुजुर्ग आदमी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा—'क्या बात है? मेरे बेटे का नाम है, चिट्ठी पत्री है क्या ?''

मैं ने 'हां' कहा और चिट्ठी थमा कर चलता बना.

थोड़ी दूर जाने के बाद उस बुजुर्ग आदमी की पुकार सुनाई पड़ी, ''ओ डाकिया . . .ओ डाक वाले भाई. जरा रुकिये तो . . .!''

पीछे मुड़ कर देखा तो वे रुक जाने के लिए हाथ से इशारा कर रहे थे. इशारे से मैं रुक गया. वे करीब पहुंच कर बोले—'माफ करना भाई. यह मेरा बेटा की चिट्ठी नहीं है. यह अनिल कुमार गुप्ता की चिट्ठी है.'' उन्हें दे दो. मेरा बेटा तो अशोक कुमार गुप्ता है.''

'अनिल कुमार गुप्ता'. मैं ने उन से चिट्ठी ले ली, और अनिल कुमार गुप्ता का घर का ठिकाना पूछ कर आगे चल पड़ा.

अनिल कुमार गुप्ता के घर पहुंचा.

निल कुमार गुप्ता उर्फ ए. के. गुप्ता घर पर थे. उम्र पचपन को छू रही थी. हल्के सांवले थे. पर चेहरा से पक्के कानून बाज लगते थे. उन के पास आ कर मैं ने पूछा ''आप ही का नाम ए. के. गुप्ता यानी अनिल कुमार गुप्ता है ना?''

'हां''

मैं ने उनके हाथ चिट्ठी थमा दी. चिट्ठी देख कर वे मेरे ऊपर विफर पड़े. दरअसल चिट्ठी खुली हुई थी. उन्होंने जोर की एक चीख मारी—'इस चिट्ठी को किसने खोला?''

मैं ने थरथरा कर गलती जाहिर कर दी—''साहब, दरअसल गलती तो मेरी नहीं थी. फिर भी गलती मेरी ही है. ए. के. गुप्ता' का पूरा नाम मुझे मालूम नहीं था. इस लिए अशोक कुमार गुप्ता के पिता ने इसे अपने बेटे की समझ कर ले ली थी.''

'इसे पढ़ भी लिया?''

''हजूर, पढ़ा होगा!''

अनिल कुमार गुप्ता की आंखें लाल-पीली हो गईं. यानी गुस्सा उन का सातवें आसमान में चढ़ गया. चेहरा तो गर्म तवा सा दिखाई पड़ा. गुस्सा से वे झिड़क उठे—'तेरी नौकरी चौपट कर दूंगा. जानता नहीं? यह राज की चिट्ठी है।''

मैं ने अनिल कुमार गुप्ता से माफी मांगना मुनासिब समझा. बोला, 'हजूर गलती माफ करें. आइन्दा ऐसी गलती नहीं होगी. ए. के. गुप्ता के नाम चिट्ठी आए तो आप ही को दूंगा.''

मेरी दयनीय बातों से जरा वे पसीज गए. नियत हो कर बोले—'जानते हो. यह चिट्ठी किस की है? मेरे समधी की है. दहेज का जिक्र किया है उन्हों ने. दूसरे लोग पढ़ लें तो समझेंगे क्या?''—अजीब मुसीबत थी।पर टल गई. मैं डर रहा था, कहीं दफ्तर में इस की रिपोर्ट न कर दी जाए. पर ऐसा कुछ सुनने को नहीं मिला. उस दिन से अनिल कुमार गुप्ता से मेरा अच्छा सा परिचय बन गया. जब कभी उन के घर हो कर गुजरता था, तो वे पूछ लेते थे—'कैसे हो? चिट्ठी आयी है या नहीं.'' आदि-आदि. खड़ा-खड़ा ' थोड़ी सी बातें कर लेता था और चल देता था.

वैसे ही एक दिन ए. के. गुप्ता की चिट्ठी आई. लिफाफा देख कर मैं जान गया कि अनिल कुमार गुप्ता की चिट्ठी है और उन के समधी जी ने भेजी होगी. शादी वादी का जिक्र होगा. इसे सोच कर मैं ने तत्काल ही चिट्ठी ले कर ए. के. गुप्ता को देदी.

उस दिन शाम को सात बजे मैं अपना डेरा में था. मेरा ठिकाना पूछते-पाछते तीन-चार युवक आ पहुंचे. आने की आहट सुन कर मैं बरामदा में हो गया.

युवकों में एक ने पूछा—'तुम यहां का नया पोस्ट पीऊन हो ना?''

मैं ने औपचारिकता से जवाब में कहा—'हां, बात क्या है? आइये, बेठिये.'' मेरे आग्रह पर लम्बा-गोरा-पतला हिप्पी सा युवक आवेश में झिड़क उठा—'बैठने के पहले तेरी हड्डी पसली एक न कर दूं. बतां तुमने मेरे पिता के हाथ में मेरी चिट्ठी क्यों दी?''

मै आवाक् हो गया. अकेली जान, वे चारजन. आस-पास सगे संबंधी कोई न थे. नौकरी करते केवल दस दिन गुजर रहे थे. मारे डर के मैं पत्ता सा कांपने लगा. घबराये स्वर में पूछा—'भाई साहब, बात क्या है? जरा इत्मीनान से बोलिये.''

तीसरा युवक फिल्म स्टाइल दिखा कर बोला 'जी चाहता है, तेरा पेट में चाकू भोंक दूं.''

मेरी तो अक्ल चरने लगी. काटो तो खून नहीं जैसा लगा. मन में सोचा. जो नौकरी आराम देह होती है, वह समय-समय पर जानलेवा भी हो सकती है. युवकों के हाथों पिटा जाने की नौबत पास आते देख मैं जरा दृढ़ हो गया. बोला 'चाकू भोंकने के पहले बताइये कि मेरा कसूर क्या है?' न जान न पहचान. दोस्त न दुश्मन. मैं ने क्या बिगाड़ा है आप लोगों का?''

मेरी दृढ़ता से युवक जरा सहम गए. हिप्पी सा युवक नरमी से बोला, 'दरअसल बात ऐसी है कि आप ने मेरा नाम का लव-लैटर पिता जी को क्यों दिया?''

मैं ने पूछा. 'कब?''

आज''.

''आज मैं ने ऐसी गलती नहीं की है जिस का नाम से चिट्ठियां रहतीं हैं. उसी को देता हूं या तो घर में डाल देता हूं.'' मैं बोला.

युवक बोला 'मेरा नाम की चिट्ठी पिता जी को मिली है.''

मैं ने पूछा, ''आप का नाम?''

''अरुण कुमार गुप्ता''

'यानी ए. के. गुप्ता. और आप के पिता जी का नाम भी ए. के. गुप्ता यानी अनिल कुमार गुप्ता है ना?''

युवक ने मायुसी से सिर हिला-या—'हां''

मैं ने समझाया—'भाई अरुण कुमार गुप्ता, इसमें दरअसल मेरा दोष नहीं है. आप के शार्ट नेम लिखने वाली का दोष है. आप भी अगर मेरी जगह रहते तो वही करते, जो मैं ने किया है. ए. के. गुप्ता से मैं क्या समझूं आप को या आप के पिता जी को. उस चिट्ठी को आप के पिता जी की चिट्ठी समझ कर मैं ने उन्हें दे दी. मुझे क्या मालूम था कि प्रेम-पत्र बेटा और पिता दोनों के नाम से आया करता है!''

युवक अर्थात् अरुण कुमार गुप्ता एकदम खिसिया गया. दूसरे युवक खामोश खड़े रहे. मैं ने फिर से समझाया. 'भाई अरुण, आइन्दा ऐसी गलती नहीं होगी. हां, जरा अपनी प्रेमिका को बता दें कि वह आप का पूरा नाम लिखा करे.''

युवक अपनी गलती महसूस कर के चलते बने.

एक हफ्ता के बाद उस मोहल्ला का पता पर एक मनीआर्डर आया. पाने वाला का नाम 'एन. एल. प्रसाद' लिखा हुआ था. भेजने वाला का नाम 'के. एल. प्रसाद' था, जो पटना का रहने वाला था. मनीआर्डर दो सौ रुपये का था. पोस्टमास्टर ने मनीआर्डर फार्म सहित दो सौ रुपये दे कर मुझे उस मोहल्ला में भेज दिया.

एन. एल. प्रसाद को मैं पहचानता नहीं था. न तो ऐसा नाम से वाकिफ था. न तो कभी पाला ही पड़ा था. इस लिए 'एन. एल. प्रसाद' का ठिकाना पूछते हुए मैंने मोहल्ला का आधा हिस्सा चक्कर लगा दिया. पर उस का ठिकाना नहीं मिला. आखिर में स्कूल का एक विद्यार्थी कृपापूर्वक मुझे 'एन. एल. प्रसाद' का घर तक ले चला.

एन. एल. प्रसाद घर में था. अपनेपास बुला कर मैं नेपूछा, ''आप का नाम ही एन. एल. प्रसाद है ना?''

हां, क्या बात है?''

मैं ने बताया, 'दो सौ रुपये का मनीआर्डर आया है. आप का पूरा नाम?''

'नारायण लाल प्रसाद.''

'मनीआर्डर कहां से आने वाला था? आप को मालूम है?

वह बोला—''अक्सर पटना से आता हैं.

'भेजने वाले कौन हैं? क्या लगते हैं।

'मेरे चाचा जी रहते हैं. उनका नाम के. एल. प्रसाद यानी किशोरी लाल प्रसाद है.'

शेष पृष्ठ २७ पर

पिछले दिनों चार लाख साल आगे के युग का एक वैज्ञानिक टाईम मशीन द्वारा हमारे युग में आ गया था. और मोटू-पतलू और उन के साथियों को पकड़ कर उस ने बताया था कि जैसे लोगों को पुरानी टिकटें और पुराने सिक्के जमा करने का शौक होता है. ऐसे ही उसे हर आगे पीछे के युग के आदमी जमा करने का शौक है.

उस वैज्ञानिक के साथ वे आज से दो लाख दस हज़ार साल आगे के युग में पहुंचे थे. जहां किसी दूसरे उपग्रह से आये बन्दरों और धरती के वासियों में युद्ध हो रहा था. वहां टाईम मशीन का वैज्ञानिक बन्दरों के चंगुल में फंस गया था और मोटू-पतलू टाईम मशीन लेकर वहां से भाग निकले थे.

चेला राम ने वैज्ञानिक से टाईम मशीन का कंट्रोल सीख लिया था. पर अपने युग में पीछे की ओर आने की बजाये गलती से और आगे के समय में जाने का लीवर दबा बैठा था. और मोटू-पतलू अपने साथियों समेत तीन लाख दस हज़ार साल आगे के ज़माने में पहुंच गये थे. आज कैलेंडर का साल है, १९८२. और मोटू-पतलू पहुंच गये थे सन ३११९८२ के युग में. वहां उस समय धरती पर मंगल ग्रह से आये प्राणियों का शासन था और उन्होंने धरती के वासियों को अपना कैदी बना लिया था. पतलू-चेला राम और घसीटा राम भी उन के चंगुल में फंस गये थे. उन में से घसीटाराम-चालाकी से उन का विश्वास, प्राप्त कर लिया था और वह उन की फ़ौज में भरती हो गया था. चेला राम और पतलू को पत्थर तोड़ने के काम पर लगा दिया गया था. और घसीटा राम उन का कसाई अफसर बन कर उन की निगरानी करने लगा था. मंगल ग्रह से आये प्राणियों ने धरती के फ़ौज़ी ठिकानों अंतरिक्ष केन्द्रों और वैज्ञानिक संस्थानों को नष्ट कर दिया था और धरती के वैज्ञानिक चुनचुन कर मार डाले थे.

पर वहीं एक गुप्त स्थान पर धरती वालों का एक विशाल अंतरिक्ष केन्द्र मंगल ग्रह के प्राणियों की नज़र से चूक गया था और वहां छुपे वैज्ञानिकों ने चुपके-चुपके एक महान अंतरिक्ष यान तैयार कर लिया था. और दुश्मन के घर में उससे टक्कर लेने के लिये मंगल ग्रह जाने के लिये तैयार था. चेला राम, पतलू और घसीटा राम से बिछड़ने के बाद मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर छुपते-छुपाते *अपनी जान बचाते धरती वालों के गुप्त अंतरिक्ष केन्द्र* में पहुंच गये थे और अंतरिक्ष यान में जा छुपे थे और अंतरिक्ष यान मोटू-डाक्टर झटका और जूडो मास्टर समेत मंगल ग्रह की ओर चल दिया था.

आज आप सन १९८२ के युग में जी रहे हैं. चलिये, हम आप के लिये चलते हैं आज से ३१०००० साल आगे के ज़माने में. देखिये उस समय का विज्ञान कहां से कहां पहुंच गया है.

मंगल ग्रह के अधिकारी इस बात से परेशान थे कि धरती वासियों का एक अंतरिक्ष केन्द्र उन की बरबादी से कैसे बच गया.

आ जाओ. मैं यहां हूं ही इसी लिये कि अपने और तुम्हारे साथ-साथ इस पूरे अंतरिक्ष केन्द्र को भी समाप्त कर दूं.
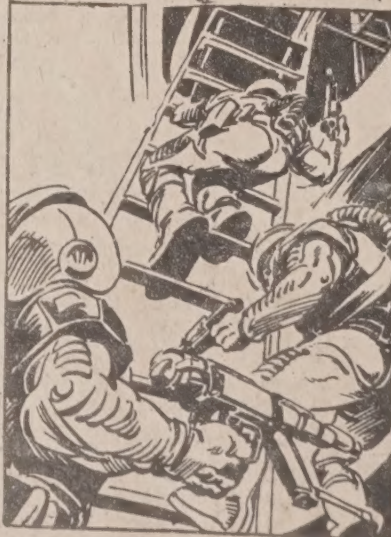
वह एक आदमी अपनी जान पर खेल गया. और वैज्ञानिक केन्द्र को बारूद के धमाके से उड़ा कर उसने ...
अरे यह स्विच कैसा दबाया है इस ने ?

SELF-
DESTR
भागो

.... मंगल ग्रह के कितने ही सिपाहियों का सफ़ाया कर दिया
धड़ाम

क्या बकवास है. वैज्ञानिक केन्द्र की धज्जियां उड़ गईं और हमारे सैकड़ों आदमी मारे गये.
अब हम उनके ठिकाने के बारे में कुछ भी पता नहीं लगा सकते.
धड़ाम
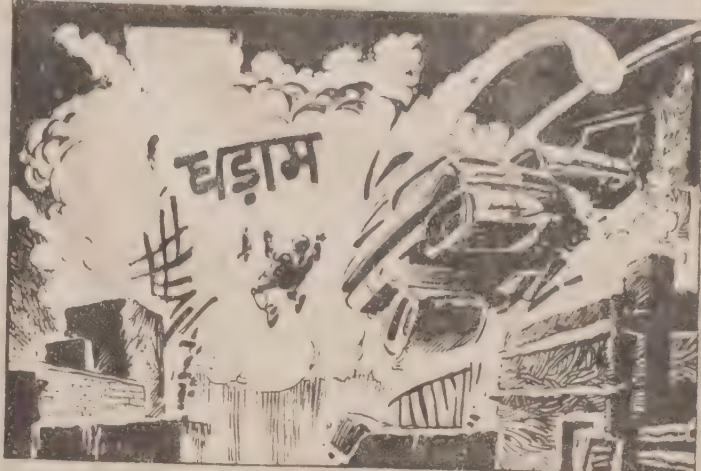
यह धमाका कैसा हुआ ? कोई भूचाल आया है क्या ? ?
भोपाल आया है क्या ? अरे रेल में बैठा झांसी और भोपाल के सपने ले रहा है क्या ?

अरे ओ सपनों के सौदागर पत्थर तोड़ नहीं तो मैं तेरा सर तोड़ दूंगा.
कैसे उल्लू से पाला पड़ा है.
जो अपने ही साथियों का दुश्मन बना है.

उधर धरती से उठा अंतरिक्ष यान अब तेज़ी से मंगल ग्रह की ओर बढ़ रहा था.

यह चूहे कहां से आ गये यहां.
तुम कौन-हो ? कहां से आये हो ? ?
अंतरिक्ष यान में कैसे घुस आये ? ? ?
एक समय में एक सवाल करो भाई !

एक सर फिरा वैज्ञानिक हमें अपनी टाईम मशीन में कैद करके लाखों साल आगे ले आया था. वह तो पता नहीं कहां जा मरा. हम उसकी टाईम मशीन में धक्के खाते यहां आ पहुंचे है. हमारे कुछ साथियों को उन अजीब से आदमियों नें पकड़ लिया या जान से मार दिया. हम जान बचाने के लिये यहां आ छुपे थे.
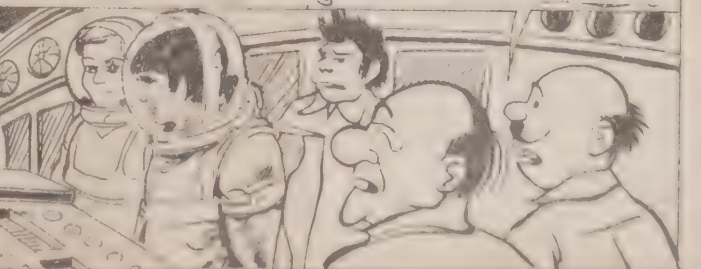
अब मंगल ग्रह केवल चौदह लाख मील दूर रह गया है.

अब यह तुम बताओगे कि हमारी जान बची है या
फंसी
बची भी है और फंसी भी है.
दोगली बात कर रहे हो. तुम राजनारायण के चेले
क्या
कौन राज नारायण ?
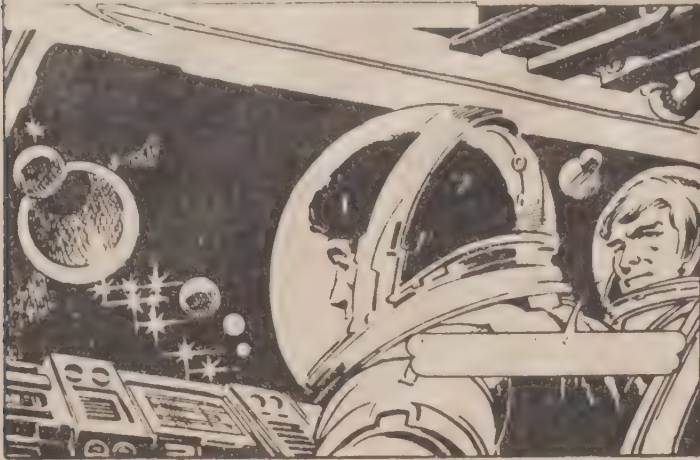
वही जिस ने चौधरी चरण सिंह को पहले नोटों में तुलवाया, फिर भूसे में तोले जाने के काबिल भी नहीं छोड़ा.
यह अपने युग की, आज से कई लाख साल पहले के ज़माने की बात कर रहे हैं.
तुम्हारे पास टाइम मशीन है, इसलिये तुम काम के आदमी हो.
वरना क्या तुम हमें अगले बस स्टाप पर नीचे उतार देते ?
तुम्हें अंतरिक्ष के काले समुद्र में फैंक देते.
हम ने भी टाईम मशीन बना ली थी. पर उसे मंगल ग्रह से आये तांबे के प्राणियों ने नष्ट कर दिया.
क्या कहा ? मंगल ग्रह से आये तांबे के प्राणी ?
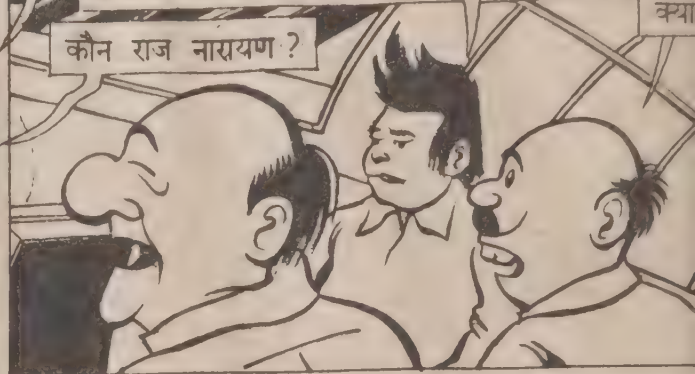
हां. वह लाल रंग के प्राणी तांबे के बने हैं और मंगल ग्रह से आये हैं. उन्होंने हमारे फौजी ठिकाने तहस-नह कर दिये हैं. अंतरिक्ष केन्द्रों और ऊर्जा के भंडारों को न कर दिया है. हमारे अधिकतर वैज्ञानिकों का सफ़ाया क दिया है. और सारी धरती पर आज मंगल ग्रह से आये इन् तांबे के बने लाल प्राणियों का कब्ज़ा है. हम ने उनक नज़र से बचे एक गुप्त वैज्ञानिक केन्द्र में इस विशाल अंतरिक्ष यान का निर्माण किया है.
और अब अपनी ज बचाने के लिये हमारी जान फंसा कर भाग रहे
यहां अपनी जान बचाने का सवाल नहीं है. मंगल ग्रह वालों को धरती से भगाने का सवाल है.
जिसके जवाब में तुम धरती से भाग रहे हो और हमें भगाये लिये जा रहे ह

तुम कई लाख साल पुराने जमाने के बेवकूफ़ बन्दर हो. यह बात आसानी से नहीं समझोगे. हम मंगल ग्रह पर जा कर उन्हीं के घर में उन्हीं से लड़ने जा रहे हैं.
तुम अपने घर में उन से नहीं लड़ सके उन के घर में क्या ख़ाक लड़ोगे.
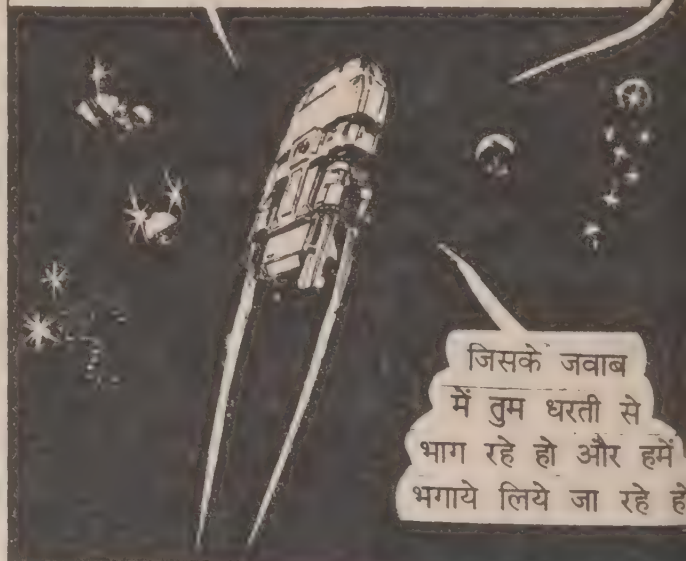
तुम्हारे पास फौज कहां है लड़ने के लिये ?
तुम दो आदमी दो चनों के बराबर हो. कौन सा भाड़ फोड़ लौ
दो कहां हैं. तुम तीन भी तो आ मरे हो
आ मरे हैं ? क्या मतलब ? हमें कुर्बानी का बकरा बना कर आगे-आगे लेकर चलोगे ?
मैं मरना नहीं चाहता. मुझे
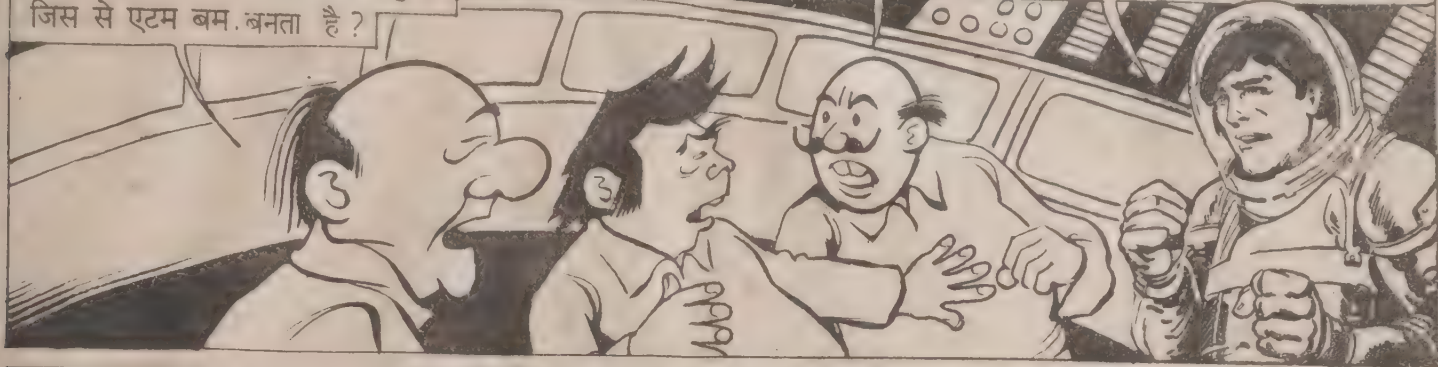
क्या बच्चों जैसी बातें कर रहे हो? तुम्हारे ज़माने का एटम बम तो आज के प्रगतिशील युग में एक खिलौना है. 'एक्सनोबियम'' मंगलग्रह वालों का ऐसा विनाशकारी पदार्थ है जो बड़े से बड़े पहाड़ों को पिघला कर लावा बना देता है. जिसने हमारे जटिल और विशाल वैज्ञानिक केन्द्रों और मीलों फैले बड़े-बड़े कारखानों को जला कर राख बनाया है और उस राख को भी ऐसे मिटाया है कि वहां चटियल मैदान को देख कर कोई ज़रा सा भी अनुमान नहीं लगा सकता कि यहां कभी ऊंची-ऊंची बिल्डिगें और जटिल मशीनें काम करती थीं. ''एक्सनोबियम'' के सामने हमारी विनाशकारी और शक्तिशाली ''लज़िर बीम'' भी कुछ नहीं. वे अपने 'एक्सनोबियम'' से हमारी लीजर बीम'' की भयंकर गर्मी को चांद की ठंडी चांदनी में बदले देते हैं. उस के असर में आकर हमारे एटम और हाईड्रोजन बमों में दिवाली के पटाखों जितनी विनाशकारी शक्ति रह जाती है.

यह बड़ा खतरनाक पदार्थ है इन के पास.

हां इसी के कारण वे आज धरती पर ऐसे आ बैठे हैं...

जैसे अण्डे पर मुर्गी आ बैठती है.

अबे वे अण्डे का आमलेट बना कर खा रहे हैं। तू मुर्गी बिठाने की बात कर रहा है.
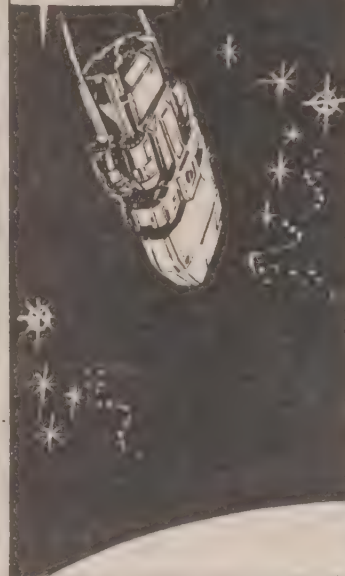
इसलिये हमें उनके एक्सनोबियम के भंडार का पता लगाना है. और यह देखना है कि हम उसे कैसे नष्ट कर सकते हैं. इस काम में चाहे हमारी जान चली जाये.
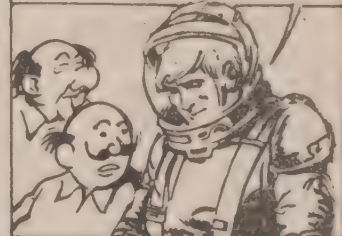
जान चली जाये ऐसे कह रहे हो, जैसे कोई हमारी जेब से मूंगफली निकाल कर खा जाये.

अरे राम के बन्दो। मैं फिर कह रहा हूं, मुझे यहीं उतार दो.

क्या शोर मचा रहे हो. एक बन्दर के मरने से दुनिया में ऐसी कौन सी कमी आ जायेगी.

अरे कसाईयों, मैं बन्दर नहीं हूं मैं भी आदमी हूं, बीस साल जंगल में रहने के कारण ऐसा दिखाई दे रहा हूं.

लो वह आ गया मंगल ग्रह.

पानी में ही उतार लो, सारा ग्रह पानी में डूबा हुआ है.

मंगल ग्रह पर पानी! हम ने सुना है मंगल ग्रह पर आग उगलता लावा है.
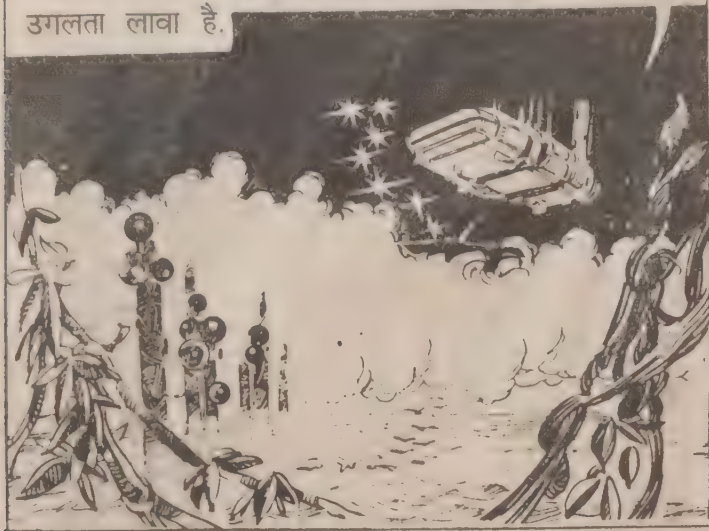
तुम तीन लाख साल पीछे की बात कर रहे हो. हर ग्रह ज़माने के साथ-साथ बदलता रहता है.

किसी एक्सनोबियम तोप ने हमला किया.

जल्दी पानी में ग़ोता लगा जाओ.

कोई हमारा पीछा कर रहा है.

मैं इसे डांज दे दूंगा.

पुल के इस छोटे मुंह से वह बड़ा जहाज़ इस ओर नहीं आ सकेगा.
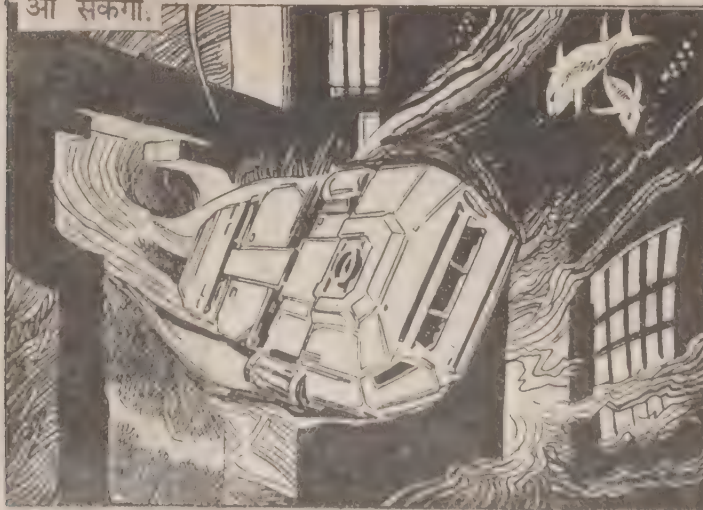
वास्तव में वह जहाज़ पुल से टकरा कर रुक गया.
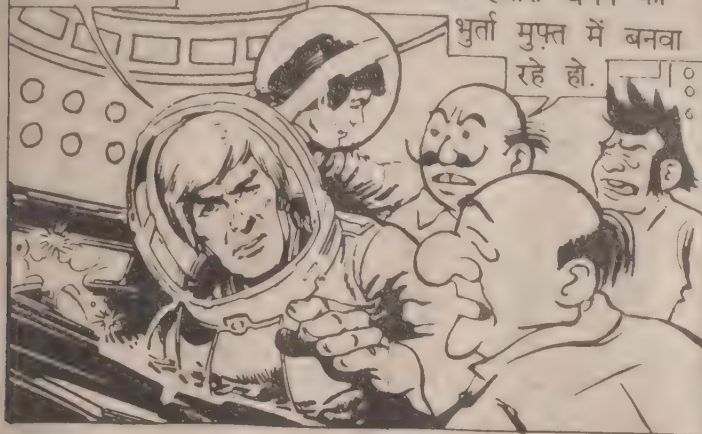
किसकी खाल किस ने खींची. मंगल ग्रह के
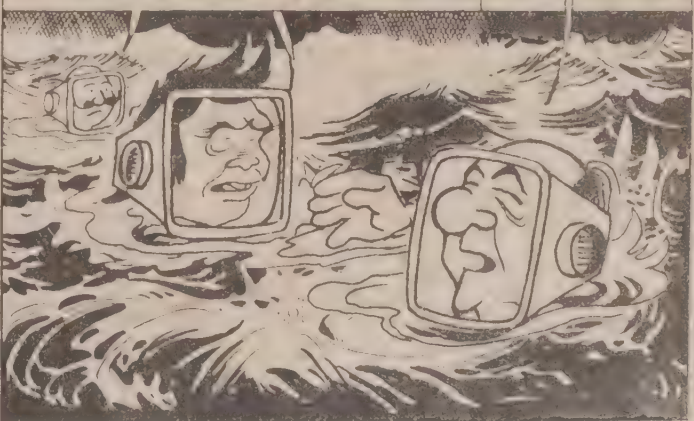
ो चीखती है—

किसी मृत्यु से भयभीत ी थी, चीख धीरे से आरम्भ तेज और तेज होती चली गई तक चीख की आवाज से निकट राजू के कान फटने लगे। डर की एक लहर उसके शरीर को कंपा गई, ऐसी डरावनी आवाज उसने जीवन में पहली बार ही सुनी थी।

परन्तु थी एक पुराने फैशन की बिजली की अलार्म घड़ी। घड़ी का निरीक्षण करने के लिए उसे अलग किया था। और दूसरे ही क्षण घड़ी राजू की ओर चीख उठी थी।

राजू ने घड़ी की बिजली का तार पकड़ कर साकेट से बाहर खींच लिया। चीख रुक गई, राजू ने राहत की साँस ली। औरत के समान घड़ी की चीख काफी घबरा देने वाली थी। उसके पीछे पैरों का शब्द हुआ महिन्दरसिंह और श्याम नारायण जो माथुर कबाड़ी घर के अगले भाग में काम कर रहे थे भाग कर आये थे।

"ओह! वह क्या था"? श्याम ने पूछा।

'राजू तुम्हें चोट तो नहीं आई' महिन्दर ने घबरा कर राजू को देखते हुए कहा।

राजू ने अपना सिर हिला दिया।

सुनो तुम्हें मैं कुछ अजीब सी चीज सुनाना चाहता हूँ' वह बोला!

दुबारा उसने घड़ी को प्लग कर दिया और वातावरण उसी भयावनी चीख से भर गया, उसके तार खींचते ही चीख अकस्मात ही रुक गई।

'वाह! एक चीखने वाली घड़ी और राजू कहता है कुछ अजीब सी चीज'।

मालूम नहीं राजू तब क्या कहेगा जब घड़ी पर निकल आने पर उड़कर चली जाये', श्याम मुस्कराया 'तब यह कहेगा बिलकुल अजीब चीज जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैंने आज तक ऐसी अजीब चीज नहीं देखी है'।

राजू ने उनके मित्रतापूर्ण व्यंग सुने अनसुने कर दिये और घड़ी का निरीक्षण जारी रखा, वह घड़ी को उलटपलट कर सब तरफ से बड़े ध्यान से देख रहा था और कुछ क्षण ही बाद बोला, 'आह'।

'आह क्या महिन्दर ने पूछा।

'अलार्म को चालू किया हुआ है, मैं इसे बन्द कर घड़ी को प्लग करता हूँ', राजू बोला

उसने ऐसा ही किया और घड़ी घरर की आवाज के साथ चलने लगी। उसने और कोई आवाज नहीं निकाली।

'देखते हैं' 'अब क्या होता है' कह कर राजू ने अलार्म फिर से चला दिया और प्लग लगाते ही घड़ी की चीख दुबारा सुनाई दी, राजू ने जल्दी से घड़ी को बन्द कर दिया।

'ठीक है वह बोला हमने रहस्य का पहला भाग समझ लिया है, घड़ी अलार्म बजाने के स्थान पर चीखती है।

'कौन सा रहस्य? महिन्दर ने पूछा 'किस रहस्य का पहला भाग हम समझ गये हैं?

'राजू का मतलब है इस घड़ी की चीख में अवश्य ही कोई रहस्य है और उसे मालूम हो गया है, यह क्यों चीखती है, श्याम बोला

'क्यों नहीं' राजू ने उसे ठीक किया 'केवल कब! घड़ी अलार्म लगाने पर चीखती है, क्यों तो इससे बड़ा रहस्य है। मेरा ख्याल है इसके रहस्य को पता लगाने में मजा आयेगा'।

'तुम्हारा क्या मतलब, खोज करना?' महिन्दर ने प्रश्न किया 'घड़ी की कैसे खोज की जा सकती है, उससे प्रश्न पूछे या फिर उसे यातना दें?'

अलार्म के बजाये चीखने वाली

हां रहस्यमयी है' राजू ने उत्तर दिया. और जासूसों का आदर्श वाक्य है—

हम हर वस्तु की खोज करते हैं, श्याम और महिन्दर साथ-साथ बोले।

'ठीक है ! मान लिया यह एक रहस्य है फिर भी मैं जानना चाहता हूँ, इसकी खोज हम कैसे करेंगे ?'

'यह पता लगा कर कि इसको किस लिए चीखने वाली बनाया गया था', राजू ने उन्हें बताया आजकल खोज करने को कोई और रहस्य भी तो नहीं है हमारे पास,क्यों न इसकी खोज कर कुछ अभ्यास ही कर लें'।

'ओह नहीं ! महिन्दर बुदबुदाया, हमें कहीं न कहीं तो रुकना ही चाहिये'।

परन्तु श्याम रहस्य में दिलचस्पी लेता प्रतीत हो रहा था।

'राजू कार्य कैसे आरम्भ करोगे, उसने पूछा

करीब के बेंच की दराज में से, राजू ने अपने औजारों का थैला निकाला। लड़के माथुर कबाड़ी घर के वर्कशाप भाग में थे। यह भाग राजू के चचा मिस्टर और मिसेज माथुर के कबाड़ी घर का था। वर्कशाप को लोगों की नजरों से छिपाने के लिए चारों ओर से टूटे फूटे पुराने सामान के ढेर से ढ़का हुआ था ताकि लड़के वर्कशाप में बिना अड़चन के काम कर सकें।

इनके एक ओर मिले-जुले पुराने सामान का ढ़ेर था इसमें लोहे की बीम, पुरानी लकड़ी के बड़े बड़े टुकड़े पुरानी लकड़ी की पेटियां बाग में लगाने का पुराना बड़ा छाता था, जिससे इन्होंने एक पुराना ट्रेलर छुपा रखा था जिसमें लड़कों का दफ्तर था जासूस लड़के इसमें कुछ गुप्त रास्तों से ही घुस सकते थे जो कि आदमियों के लिये छोटे ही पड़ते।कुछ भी हो अभी लड़कों को भीतर जाने की आवश्यकता नहीं थी।

राजू ने पेचकस निकाल कर घड़ी को पीछे से खोल लिया और ढक्कन को तार के सहारे नीचे कर दिया ताकि घड़ी के भीतरी भाग को भली भांति देख सके, अन्दर के हिस्से को देख कर वह कुछ देख कर बोला 'आह' और फिर उसने घड़ी के भीतरी भाग में लगे एक रुपये जितने गोले की ओर संकेत कर कहा, "लगता है इस यन्त्र से चीख निकलती है, किसी बहुत चतुर मिस्त्री ने इसे घंटी के स्थान पर लगा दिया है।

'परन्तु क्यों ?' श्याम ने पूछा

'वही तो रहस्य है, इसका पता लगाने के लिए हमें सबसे पहले यह मालूम करना होगा, इसे किसने लगाया है।'

'मुझे समझ नहीं आता तुम इसका पता कैसे लगाओगे,' महिन्दर बोला।

'तुम एक जासूस के समान नहीं सोच रहे हो', राजू बोला,'अब कोशिश करो, और सोच कर मुझे बताओ हम दूसरा पता कैसे लगा सकते हैं ?'

'अच्छा—पहले मेरे ख्याल में, मैं यह पता लगाने की कोशिश करूंगा कि घड़ी आई कहाँ से है।

'सही और उसका पता कैसे करोगे ?'

'हाँ, तुम्हारे चाचा मि० माथुर पुराने सामान के साथ यहां लाये थे, हो सकता है उन्हें ध्यान हो, वे घड़ी वहाँ से लाये हैं।

'माथुर साहब हर समय इतना पुराना सामान खरीदते हैं मुझे शक है उन्हें याद होगा कि यह उन्होंने कहाँ खरीदी थी।'

'सच है' राजू ने सहमत होते हुए कहा 'परन्तु महिन्दर ठीक ही कह रहा है, सबसे पहले माथुर साहब से घड़ी के विषय में पूछना ही ठीक होगा।' उन्होंने अभी आधे घंटे पहले ही घड़ी कुछ और टूटे फूटे सामान के डिब्बे में मुझे दी थी। देखते हैं डिब्बे में और क्या सामान है।

गत्ते की एक पेटी वर्कशाप में राजू के बेंच पर रखी थी, राजू ने पेटी को अपनी ओर खिसका कर उसके भीतर का सामान निकालना शुरू किया सबसे पहले परों से भरा एक उल्लू निकला जिसके अधिकांश पर बाहर गिरे जा रहे थे, उसके नीचे कपड़े झाड़ने का एक टूटा फूटा ब्रुश निकला, फिर सुराहीदार गत्ते का एक लेम्प, एक फूलदान और किताबों को रोकने के लिए बनाये घोड़े के सिर जैसे किनारे और कुछ छोटी मोटी पुरानी बेकार वस्तुएं निकलीं। सभी चीजें अत्यन्त मूल्यवान या बेकार जैसा भी समझो वैसी ही थीं।

'मेरे ख्याल से बहुत सा पुराना सामान इकट्ठा कर डिब्बे मे डालकर किसी ने फेंका लगता है', राजू बोला।

शेष पृष्ठ ३२ पर

व्हीलर किस्सा

एक मशहूर सूटकेस बनाने वाली कम्पनी ने व्हीलर सूटकेस बनाये और खूब चल निकले हैं। व्हीलर सूटकेस में एक और चार छोटे-छोटे पहिये लगे होते हैं। जिन पर सूटकेस चलता है। कहना है कि इससे रेलवे स्टेशन व हवाई अड्डे आदि पर सूटकेस ढोने में बड़ी मदद मिलती है। फीता पकड़ कर चलिये, सूटकेस पीछे-पीछे पहियों पर चला आयेगा। अब व्हीलर सूटकेस ही क्यों हो ? व्हीलर आइडिये का लाभ दूसरों को भी पहुंचना चाहिये। कई और चीजें हैं जिन्हें उठाने या सरकाने में दिक्कत होती है। वे भी व्हीलर बन जायें जैसे-

भारी भरकम पोथियां पढ़ने वाले बुद्धिजीवियों के लिये व्हीलर ग्रन्थ हों जिन्हें लाइब्रेरी से घर ले जाने में सुविधा हो।

नाजुक मिजाज नवाबों के लिये व्हीलर सिगरेट व माचिस की डिब्बियां बनें ताकि इन्हें उठाने में नाजुक नवाबी कलाई पर बोझ न पड़े या शेरवानी की नाजुक जेबों पर दबाव न पड़े।

डायनिंग टेबल पर दाल, सब्जी व पुलाव के बाऊल सरकाने में भी काफी दिक्कत होती है। व्हीलर बाऊल खाना खाना आसान बना देंगे।

नल से पानी लाने के लिये व्हीलर बाल्टियां तो बननी ही चाहियें।

कुत्ते भी नाजुक मिज़ाज होते हैं। गोद में उठा कर चलना पड़ता है। कुत्तों के पैरों के लिये छोटे-छोटे पहिये बनें जिन्हें उनको पहना कर व्हीलर कुत्ते बनाये जा सकें। कुत्ते को घुमाने ले जाने में बड़ा आराम रहेगा।

बैठने के लिये मोढ़ों को सरकाना भी अजीब खीज भरा काम है। व्हीलर मोढ़े बनें तो मजा आजायेगा।

क्रिकेट सीजन है तो बैट्समैनों की सुविधा की बात सोचना भी स्वाभाविक है। व्हीलर बल्ले बैटिंग का मजा दूना कर देंगे।
गांव में लोग प्रायः नये जूते हाथ में उठा कर चलते हैं। केवल बस्ती आने से पहले ही पैरों में डालते हैं। हमारी ग्रामीण जनता की भलाई के लिये व्हीलर जूते बनने चाहियें।
लॉन में नीचे बैठे हों तो आदमी इधर-उधर खिसकता ही है। व्हीलर जींस धूप सेंकने के आनंद में वृद्धि करेगी।
दफ्तरी बाबुओं के लिये व्हीलर टिफिन कैरियर अच्छे रहेंगे।
स्टूडेंट्स के लिये व्हीलर बस्ते पढ़ाई का बोझ हल्का करेंगे। आजकल वैसे ही कोर्स में कितनी किताबें होती हैं।
कुछ स्त्रियां कद्दू इसलिये नहीं खरीदतीं क्योंकि उसे घर उठा कर ले जाना दुष्कर काम होता है। सब्जी विक्रेता कद्दू को व्हीलर कद्दू बना कर कद्दुओं की बिक्री बढ़ा सकते हैं।
गांव में जंगल दिशा लोटा उठा कर जाना पड़ता है। व्हीलर लोटा हो तो नित्य कर्म सुगम हो जाये।
अर्थी को चार आदमी उठा कर ले चलते हैं। व्हीलर अर्थी बने तो एक ही आदमी खींच कर ले जा सकेगा। बाकी सब रोने और छाती पीटने के लिये फ्री हो जायेंगे।
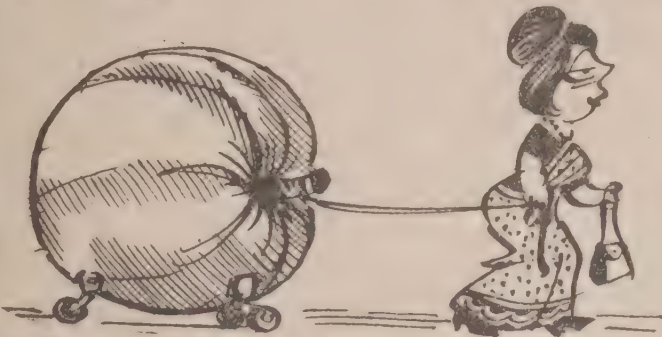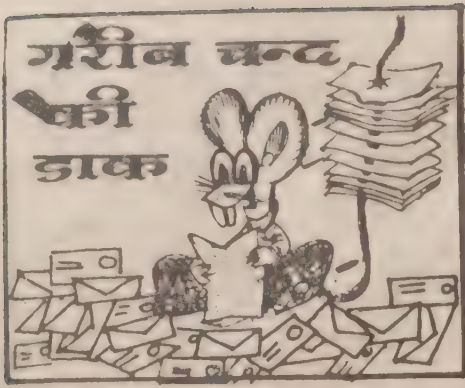
मोहम्मद जहांगीर, रांची : लोग दुःख में ही भगवान को क्यों याद करते हैं?

उ० : दुख में यार, दोस्त व चमचे जो बगैर इस्तीफा दिये चले जाते हैं उनकी वेकैन्सी पूरी करने के लिये।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी : गरीब चन्द जी, आदमी का अहंकार कब टूटता है?

उ० : जब कार खड़ी हो जाती है और अहं को बाहर निकल कर धक्का लगाना पड़ता है।

चन्द्र भान 'अनाड़ी', जबलपुर : वैरी गुड लाइफ, विदाउट वाइफ। आपकी क्या है, एडवाइस?

छ० : विहस्की, सोडा एंड आइस!

अनपुत ताम्राकार, भक्तपुर (नेपाल) : डियर गरीब चन्द जी, डाक्टर लट्का मेरा मतलब डाक्टर झटका और मोटू उन दोनों में किसका वजन ज्यादा होगा?

उ० : यह इस बात पर निर्भर करेगा कि तुलने से पहले कौन सा मुफ्त का खाना खाकर आया है।

अशोक जौहर 'गगन', मोती बाजार देहरादून : गरीब चन्द जी, क्या आप व आपकी बिरादरी वाले कभी सुख चैन की भी नींद सोए है?

उ० : हमारी महफिल में हमेशा रतजगा होता है। दिल वालों की दुनिया है।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, कमानिया गेट, मण्डला म. प्र. : गरीब चन्द जी गरीबी कब अच्छी लगती है।

उ.:जब गरीबी अमीर बनने का साधन बना लिया जाये यानि इधर आप गरीबी का नाटक करें और उधर अपनी झुग्गी में बिस्तरे के नीचे गड्डा खोद कमाई उसको झौंकते जायें।

लवली सिंह "नन्दा" रामगढ़ कैन्ट : पत्नी के होते क्या किसी से प्रेम करना चाहिए?

उ.:ज़रूर करना चाहिये मगर सिर पर हैलमेट पहन कर।

सलीम खान रानी (राजस्थान) : गरीब चन्दजी, मेरे घर में आपके कुछ सदस्य टिके हैं। आप अपना पता लिख भेजें मैं उनको आपके यहां भेज दुंगा, वो आपका पता पूछ रहे थे।

उ.: आपको गलतफहमी हुयी है। बह मेरा पता इसलिये पूछ रहे होंगे ताकि वे मुझे लिख भेजें मेरे यार दोस्तों को भी आपके दौलत खाने बुलवा लें।

दिनेश भटनागर "दिलदार" मुकेश भटनागर "निराला" किला चितोड़गढ़ : प्यारे गरीब चन्दजी, वह कौन सा मित्र हैजो उम्र भर साथ देता है और दुख के समय काम आये?

उ.: इसमें 'कौन सा' प्रयोग करने की नौबत ही नहीं आती। एक दोस्त भी ऐसा मुश्किल से मिलता है।

अरुण कुमार श्रीवास्तव, बेचूपुर मुगल सराय : गरीब चन्दजी मैं मौसम सम्बन्धी कुछ कविताएं तथा हास्यप्रद लतीफा भेजना चाहता हूँ, किस पते पर भेजूं कृपया बताने का कष्ट करें?

छोटा सा पता है 'रद्दी की टोकरी"

सुरेश खुराना 'पप्पी', जीन्द, हरियाणा : अगर किसी को हसांना हो तो लतीफा सुना दिया, अगर रुलाना हो तो?

उ.: पैसे उधार मांगो और भूल जाओ।

महेश कुमार मेथानी—रायपुर (म.प्र.) : डियर गरीब चन्द जी, आपका नाम गरीब चन्द कैसे पड़ा?

उ० : मुझे तो मुफ्त में ही पड़ा। मां बाप को पैसे देने पड़े हों तो पता नहीं।

मुरली धर बजाज—बिलासपुर (म.प्र.) : प्रेम की सबसे अच्छी परिभाषा क्या है?

उ० : भाई मेरे परिभाषा के पीछे क्यों पड़ा है? प्रेम एक रसायनिक क्रिया है।

मुकेश भटनागर 'सुमन'—किला चित्तौड़गढ़ (राज.) : गरीब चन्द जी, आपका दिमाग क्या इतना तेज़ है जो कि आप हमारे हर प्रश्न का उत्तर सही दे पाते हैं?

उ० : सिलबिल पिलपिल अपनी हजामत मेरे दिमाग से ही तो करते हैं।

उमेश साकुजा 'प्यासा'—बेरमो : क्या क्रिकेट खेलना आपको आता है?

उ० : क्रिकेट खेलना किसे नहीं आता? जिन्दगी बैटिंग क्रीज़ है। बेकारी, महंगाई व गरीबी लिलि, पास्को व हॉग है। हम बैटस मैन हैं इनकी शार्टपिच गैदों का सामना कर रहे हैं।

मुरलीधर बजाज—बिलासपुर (म.प्र.) : अभिनेत्री और वेश्या में अन्तर?

उ० : इनमें कोई भी अन्तर हो या न हो आपको कुछ फर्क पड़ता है? आप इन चक्करों में न पड़ें और जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपनायें। अभिनेत्री जीवन में सफल व्यक्ति है। कुछ लोग खुद जीवन में असफल होते हैं और दूसरों की सफलता देख जलते हैं। ऐसे ही लोग अभिनेत्री जैसे सफल व्यक्तित्व की तुलना वेश्या से कर अपने दिल में ठंडक पहुंचाने की कोशिश करते हैं।
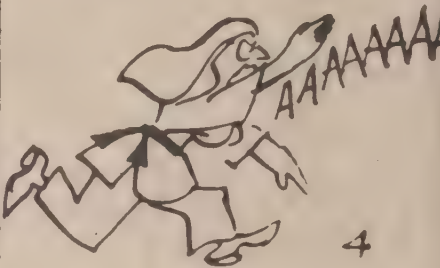
सुरेन्द्र खुराना, 'पप्पू', पुराना बाजार, मोंगा : डीयर गरीब चन्दजी, आदमी गर्म होते हैं; और नर्म होती हैं तो बच्चे क्या होते हैं?

उ.: सर्दगर्म! इसीलिये बच्चों कोजुकामजल्दी हो जाता है

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

कहावतें और मुहावरे

क्रिकेटी राज में

छायाकार: फाल स्स गिरोटा

जब हमारी भाषा में प्रचलित मुहावरे व कहावतें गढ़े गये थे तब क्रिकेट का चलन नहीं था। यदि तब आज की तरह क्रिकेट का जोश व बुखार समाज को इसे होता तो कहावतों और मुहावरों में भी उनका रंग आया होता ! शायद उनका रूप कुछ ऐसे होता —

कल हिट मारे सो आज मार, आज मारे सो अब, पल में कैच आऊट हो जायेगा सैंचुरी बनायेगा कब !
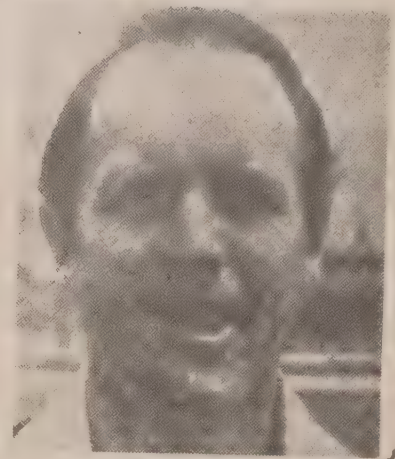
टिपटिप बराबर तप नहीं हुक बराबर पाप, जाके हृदय पेशेन्स है पारी में करेगा टॉप।

सपूत के फुटवर्क पालने में ही नजर आते हैं।

दिमाग चढ़ गया है, चौकों और छक्कों से नीचे बात ही नहीं करता।

सिर मुंडाते ही बंपर पड़े

एक रन छोड़ दो को धावे, दुर्भाग्यपूर्ण रन आउट हो जावे।

विकेट बची तो लाखों पाये लौट के नाइटवाच मैन घर को आये।

धोबी का कुत्ता-बारहवां खिलाड़ी

नो बाल की ग्वाल [illegible]

अपील किये जा कभी तो अम्पायर की अंगुली उठेगी।
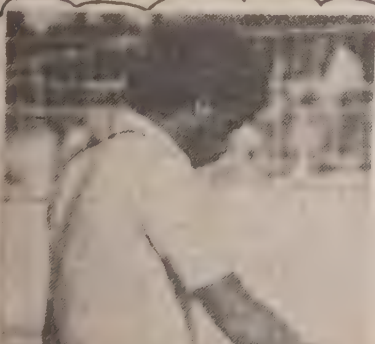
प्र. उद्यौगिक हीरे क्या होते हैं इनमें और दूसरे हीरों में क्या फर्क होता है?

भूपेन्द्र सिंह—नैनीताल

उ. सबसे पहला रिकार्ड मनुष्य द्वारा हीरों की खोज का भारत का है. भारत में हीरों की उद्यौगिक रूप में खोज २,५०० वर्ष पूर्व आरम्भ हो गई थी. शुरू से ही हीरे बहुत मूल्यवान थे. वास्तव में पन्द्रहवीं शताब्दी से पहले हीरे इतने कम पाये जाते थे कि केवल राजा रानियों के ही पास थे.

सन् १४३० तक हीरे को आभूषण के रूप में पहनने की प्रथा नहीं थी. ऐगन्स सोरल नामक फ्रैंच महिला ने फ्रैंच कोर्ट में यह फैशन आरम्भ किया था. इस को पूरे यूरोप ने शीघ्र ही अपना लिया था और इसके फलस्वरूप भारत में तीन सौ साल तक यूरोप को हीरे भेजने का काम जोर-शोर से चलता रहा.

आखिर कार यहां के हीरे उपलब्ध होने बन्द हो गये और संसार के दूसरे भाग ब्रैजील में सन् १७२५ में हीरे खोज लिये गये. वहां के जंगल और मौसम ने बहुत कठिनाई उत्पन्न की फिर भी १६० वर्ष से भी अधिक तक ब्राजील संसार को हीरे भेजने वाला मुख्य देश बना रहा.

आजकल हीरों का राज्य दक्षिणी अफ्रीका को माना जाता है जहां हीरों की उपलब्धी अचानक एक घटना से हो गई थी. एक निर्धन किसान के बेटे को एक सुन्दर पत्थर मिला उसके एक चतुर पड़ौसी ने उसे एक बढ़िया हीरा पहिचान कर खरीद लिया और जब उसने उसे बेचा तो हर युग के हीरे खोजने वाले तथा नेता उस स्थान पर मौजूद थे. एक साल के भीतर ही हीरों के तीन फील्ड ढूंढ़ लिये गये तथा किम्बरले के शहर में हीरों का एक राज्य उत्पन्न हुआ.. उद्यौगिक हीरे तथा दूसरे हीरे में केवल उसकी किस्म का ही अन्तर होता है उद्यौगिक हीरा घटिया ग्रेड का होता है. यदि ये हीरे भी दूसरे हीरों के समान बढ़िया किस्म के सुन्दर रंगवाले, बेदाग हीरे होते तो, अवश्य ही इनका प्रयोग भी आभूषणों में ही होता जहां हीरे की अधिक कीमत प्राप्त होती है.

परन्तु हीरे जैसी मूल्यवान चीज का उद्योग में प्रयोग होना कुछ अचम्भे की सी ही बात है, परन्तु हीरे को ''उद्योग का राजा'' कहा जाता है।

डायमंड शब्द ग्रीक शब्द अडमास का जिसका अर्थ है ''अजेय'' से बना है हीरा वास्तव में ही अजेय है क्योंकि हीरे को संसार में पाई जाने वाली किसी धातु से काटा नहीं जा सकता—केवल दूसरे हीरे से हीरा कट सकता है।

संसार में पाये जाने वाले हीरों का तीन चौथाई भाग आभूषणों में प्रयोग होने के बजाये उद्यौग में इस्तेमाल होता है और इनका यह प्रयोग इनकी अधिकतम कठोरता के कारण है. उदाहरण के लिये उद्यौग में प्रयोग होने वाले हीरों का २० प्रतिशत भाग बड़ी-बड़ी ड्रिलस में माईनिंग कम्पनी द्वारा पत्थरों में छेद करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है.

हीरों को पीस कर उनकी रेत बनाई जाती है जो हीरों के ग्राईडिंग व्हील बनाने में काम आती है. इन व्हील से औजार तेज किये जाते हैं और चश्मों के लैंस भी इनसे ही घिसे जाते हैं. कुछ हीरों का डाईस में प्रयोग किया जाता है.

हीरों के बिना हमारे कुछ महत्वपूर्ण उद्यौग बन्द हो सकते हैं।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बोलते अक्षर

मृत्यु

लकड़ी

हीटर

परी

हॉर्न

सिलबिल पिलपिल
ने हाकी की टांग तोड़ दी
यह तो बड़ा गजब हो गया। भारत विश्वकप हाकी में सातवें स्थान पर रहा! कहां तो हम यह उम्मीद लगाये बैठे थे भारत विश्व कप जीतेगा तो हम भंगड़ा डांस कर अपने कार्पेट में छेद निकाल देंगे, कहां गत्ते का मैडल भी नहीं मिला।
भारत कैसे जीतता जब हाकी की बागडोर ही गलत आदमियों के हाथ में है। हमारे आदमियों के हाथ में हाकी होती तो बस स्टाक रहने तक ही स्वर्ण कप पर कब्जा कर लेते और उसके साथ प्लास्टिक का कप मुफ्त में जीत लेते। अब सरकार भारत की हार की इन्क्वायरी करवायेगी।
उससे क्या होता है। सरकारी इन्क्वायरी कमीशन तो थारे दिखावे के होते हैं। सब सरकारी अफसर आपस में मिले हुये होते हैं। सब मिल कर स्कॉच व्हिस्की पीयेंगे, तन्दूरी मुर्ग खायेंगे और ऐसी गोलमोल रिपोर्ट देंगे कि किसी पर आंच नहीं आयेगी। हर सरकारी जांच आयोग के साथ ऐसे ही होता है।
फिर क्या किया जाये?
यह काम पब्लिक को खुद करना पड़ेगा तभी बात बनेगी। सरकार और अधिकारियों के भरोसे बैठे रहे तो एशिया कप और चैम्पियन कप भी हाथ से निकल जायेगा। हम तुम लोगों को ही जनता जांच आयोग बनाना पड़ेगा जो दोषी लोगों की गर्दन पर अपना पंजा रखे। अपनी दूध मलाई की ही चिन्ता न करे।
कमीशन का चेयरमैन जनता का ऐसा सच्चा सेवक होना चाहिए जो हाकी के सारे छल जानता हो, जिसको हाकी से ऐसा हो प्रेम हो जैसे किसान को हल से होता है। उस पर कभी किसी तरह का आरोप न लगा हो। जो सभी बात कहने में हिचकिचाता न हो।
जिसे न तलवार काट सके न आग जला सके।
सबसे कठिन काम ऐसे ही आदमी को खोजना है। ईमानदारी की शर्त लगा लो न। वहीं सारा कबाड़ा हो जाता है
ईमानदार होना चाहिए का मतलब है भारत की ९९.९९९ प्रतिशत लोग तो वैसे ही डिस्क्वालिफाई हो गये। ...हां...
ठहरो! मेरे दिमाग का बल्ब जलने वाला है। मिल गया...
गरीबचन्द ही इस इन्क्वायरी कमीशन के चेयरमैन शिप का हकदार है। हम लोगों को इससे ज्यादा सच्चा, ईमानदार, बुद्धिमान और हाकी का प्रेमी कैन्डीडेट नहीं मिलेगा। आशा है कि दीवाना के सारे पाठक भी हमारे चुनाव से पूरी तरह सहमत होंगे। अब भारतीय हाकी को शिखर पर चढ़ते देर नहीं लगेगी।
अब जसदेव सिंह को बार-बार यह नहीं कहना पड़ेगा कि 'दुर्भाग्य से वह फिर हाकी में भारत की जीत का समाचार नहीं सुना सके।' गरीब चंद की कृपा से जसदेव सिंह के बाल फिर काले हो जायेंगे।
हम भी कैसे बेवकूफ हैं। चेयरमैन का इतना जोरदार उम्मीदवार हमारी आखों के सामने खड़ा था और हम दूरबीन से दूर-दूर खोजते रहे।
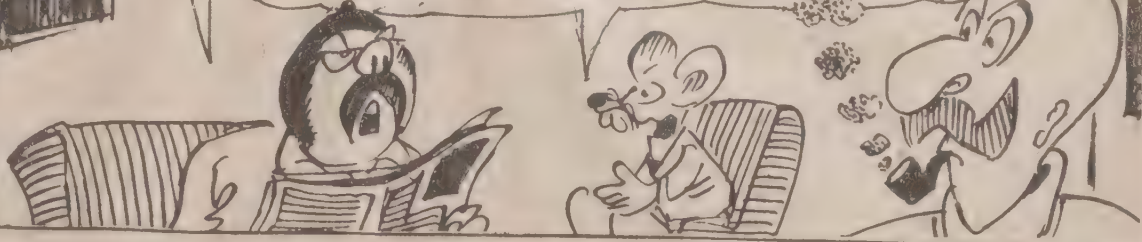
भाइयों, आप लोगों ने जनता इन्क्वायरी कमीशन का चेयर मैन बना कर मेरी जो हौसला अफजाई की है उसके लिए मैं तहेदिल से आपका शुक्रगुजार हूं। मेरे छोटे २ कन्धों पर आपने जो बोझ लादा है उसे उठाते हुए मुझे बड़ी खुशी होती है लेकिन मैं आपका ध्यान एक बात की ओर खींचना चाहता हू।
चेयर मैन के लिए मैन चाहिए। मैं एक चूहा हूं इसलिये चेयर मैन कैसे बन सकता हूं। मैं तो चेयर रैट या चेयर माउस बन सकता हूं। किसी कमीशन का अध्यक्ष आज तक चेयर रैट नहीं बना। दूसरी बात यह है कि मेरी बात कौन सुनेगा? कौन मुझे इन्क्वायरी के लिए दफ्तरों में घुसने देगा? कौन फायलें चैक करने देगा?
तेरी यह मजाल कि तू हमारी बात काटता है। अब हम समझे तू दुश्मन की टीमों के साथ-साथ मिला हुआ है, जिस दिन हालेंड और आस्ट्रेलिया के साथ हमारी टीम का मैच था उस दिन तू रात को जाकर उनकी हाकी स्टिकें कुतर कर उन्हें खोखला बना सकता था। फिर हमारी टीम जीत जाती। लेकिन तूने ऐसा नहीं किया। क्योंकि भारत को जीतता तू नहीं देखना चाहता। आज जब हम तुझे इतनी जिम्मेवारी का पद सौंप रहे थे तो तूने इन्कार कर दिया उससे तेरी पोल खुल गई
ऐह! थम ऐसा सोचते हो हमेशा हर चीज के लिए मुझे ही दोषी मानते हो।
ठहरो! बात का बतंगड़ मत बनाओ। अगर तुम ऐसा ही सोचते हो तो मैं हथियार डालता हूं। मैं सफेद कबूतर गेहूं की बाली के साथ छोड़ता हूं जो शांति का प्रतीक है। साथ ही हजारों गुब्बारे हवा में उड़ाता हूं।
अच्छा तुम इस तरह नहीं मानते तो अपनी मन मर्जी कर लो। मैं तुम्हारे कहे अनुसार चेयर मैन बनने को तैयार हूं।
मुझे पता था कि तू मेरा सच्चा मित्र है। हमारी बात कभी नहीं टालेगा। अभी मैं जाकर आल इण्डिया रेडियो, टी. वी. और प्रेस क्लब वालों को यह ऐतिहासिक समाचार सुनाता हूं। तू अपनी तैयारी कर ले।
ओह तीन दिन बाद आज गरीब चन्द अपने बिल में से निकला।
भारतीय हॉकी जांच आयोग हैड ऑफिस
जांच आयोग का काम घी शक्कर के साथ चावल खाना नहीं है। मेरे सिर पर यह आयोग की रिपोर्ट नहीं है। आयोग का बजट है। बगैर पैट्रोल के कहीं गाड़ी चलती है? पहले पैसा लगाना पड़ेगा तभी तो आयोग काम करना शुरू करेगा।
जांच आयोग का काम इतना आसान नहीं होता। खू पसीना एक करना पड़ता है। मैं तो कहूंगा कि इसने जां बहुत जल्दी पूरी कर ली। सिर पर आयोग की रिपो ला रहा है।
पांच दस रुपये लगेंगे।
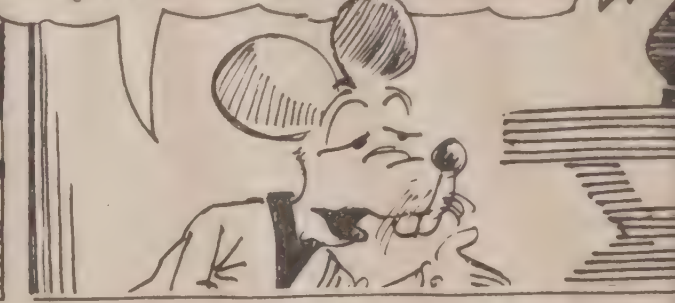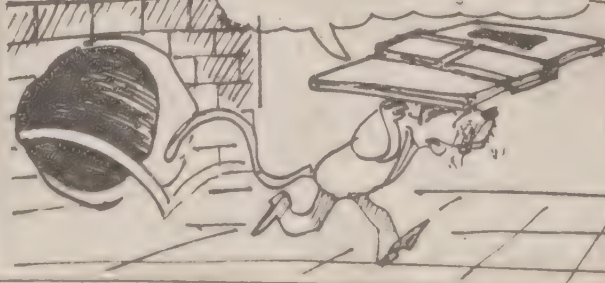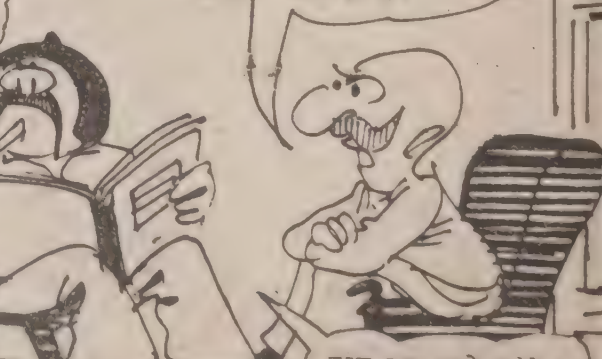
यह क्या तमाशा है ? इसमें लाखों रुपयों का जिक्र है । क्या है यह ?
इधर क्या मैं देखता यह क्या लिखता है ?
यह आयोग का बजट है ! पैसों का नाम सुनते ही तुम्हारी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई । अब थम सोचो कि आयोग के सामने गवाही देने सैकड़ों लोग व खिलाड़ी आयेंगे क्या वह मेरे बिल में आयेंगे । अगर मेरे बिल में ही दफ्तर खुल गया तो लोगों में क्या विश्वास पैदा होगा ? लोग सच्ची बात कहते डरेंगे । लल्लू कमीशन की कौन परवाह करता है ।
तो हमारे डिराइंग रुम के कोने मे लगा ले अपनी टेबुल मेज
कहीं यह म्हारे साथ हेरा फेरी करने की कोशिश तो नहीं कर रहा
मेरा दफ्तर पटियाला हाऊस में होगा जहां कुछ वर्ष पहले शाह कमीशन बैठता था । यह देश की इज्जत का सवाल है । आयोग की कार्यवाही देखने हजारों लोग रोज आयेंगे आयोग बैठेगा तो दीवाने आम जैसा समां होगा । रेडियो और टी.वी.वालों के लिए विशेष गैलेरियां होंगी । पुलिस का कड़ा प्रबन्ध होगा । हो सकता है गवाही देने के लिए इंदिरा गांधी और राजीव गांधी को भी आना पड़े । लम्बा चौड़ा स्टाफ होगा । मेरे रहने के लिए महारानी बाग में कोठी होगी । मेरे लिए इम्पोर्टेड गाड़ी होनी चाहिए और स्टाफ के लिए कारें । तब कहीं जाकर लोगों में विश्वास पैदा होगा। वह निडर होकर बड़े-बड़े लोगों की पोल खोलने सामने आयेंगे ।
रविचन्द्र कमीशन
दस तो आयोग के विशेष वकील होंगे जो गवाहों से जिरह करेंगे
और लिखता है कि बम्बई जाना पड़ेगा जांच के लिए । उसके लिए विशेष एयर बस का प्रबन्ध होना चाहिए । हम लोग खुद आज तक जहाज पर सवार नही हुये । तू मुफ्त में आयोग के खर्चे पर हवाई सैर करेगा ? पैदल बम्बई नही जा सकता ?
पैदल जाने पर आयोग की नाक नहीं कटेगी ? खैर मान लिया जाए कि आठ-दस बार का बम्बई का सफर मैं पैदल तय करुं तो यह सोच लो इस सफर में ही मेरे साठ-सत्तर साल लग जायेंगे । आयोग की रिपोर्ट तुम्हें सन् २०८२ से पहले नहीं मिल पायेगी । तब तक थम दोनों की राख खेतों में डाली जा चुकी होगी । उन खेतों के गन्नों के गुड़ से लोग चाय बनाकर पी चुके होंगे ।
पूरे तीन करोड़ रुपये का बजट बनाया है इसने । हम तीन करोड़ कहां से ला सकते हैं ?
मैं तो यही समझ रहा था कि पन्द्रह बीस रुपए में बात बन जाएगी । लेकिन यह तो बड़ा खर्चीला सौदा है । चन्दा मांग कर भी इतने पैसे नही बनेंगे ।
FILE
हमें कमीशन का विचार छोड़ना पड़ेगा और भी गम हैं जमाने में
थम दोनों एक बार कमीशन बनाकर खर्चे की बात पर पीठ नहीं दिखा सकते मुझे इतना तंग करके थमने कमीशन का चेयर मैन बनने पर मजबूर किया था । मैं थम पर दस लाख रुपए का मानहानि का दावा करूंगा । दीवाना के सारे पाठकों के सामने मेरी कितनी बेइज्जती खराब हुई ।
चल चूहे सुलह कर ले । हम तुझे दो पैकेट डालिमा बिस्कुट देंगे ।
भारतीय हाकी के नाम दो पैकेट बिस्कुटों की कुर्बानी ही सही
चलो अपने आदमी समझ कर तुम्हें इस बार छोड़ देता हूं ।

टेन्डर आमन्त्रित हैं

विभिन्न निर्माण कार्यों के लिये ठेकेदारों से टेन्डर मांगे जाते हैं। ठेकेदार पैसा कमा लेता है और ठेका देने वाला अपने सिर से काम करवाने के सिरदर्द से छुटकारा पा जाता है। दोनों का फायदा। इस शुभ प्रणाली का प्रयोग हमारे कामों के कुछ क्षेत्रों में ही किया जाता है। ठेकेदारी की इस लाभदायक प्रथा को जीवन के हर क्षेत्र में काम में लाया जाना चाहिये। लाखों लोग ठेकेदारी का धंधा कर बेकारी की समस्या के बोझ को हल्का करेंगे और करोड़ों लोग छोटे मोटे सरदर्दों से छुटकारा पा लेंगे कुछ उदाहरण देखिए—

स्कूल होम वर्क के लिये टेन्डर आमंत्रित हैं

पप्पू और पिंकी क्रमशः चौथी और तीसरी कक्षा के छात्र रजिस्टर्ड होम वर्क ठेकेदारों से टेन्डर आमंत्रित करते हैं।

कार्य—दोनों का सारे विषयों का रोज होमवर्क पूरा करके देना होगा। होमवर्क को Good या अच्छा का रिमार्क मिलना चाहिए। ठेका लेने वाले को दस रुपये अग्रिम पेशागी जमा करनी होगी।

मजनूं इन्वाइट्स टेन्डर्स

मेरी जगह रेगिस्तान में भूखे-प्यासे लैला-लैला पुकारते हुये भटकने के लिये ठेकेदारों से टेन्डर चाहियें।

कार्य—टिफन कैरियर में खाना तथा थर्मस में साथ पानी या बीयर ले जाने पर उपरोक्त टेन्डर रद्द किया जाये। दो बार लोगों से पत्थर भी खाने पड़ेंगे। शेव नहीं करना होगा।

अनुमानित राशि—३३०० रुपये तथा पत्थरों से जख्मी होने पर इलाज का खर्च।

जमानत—अपनी इम्पोर्टेड जींस व टी शर्ट जमानत के रूप में जमा करनी होंगी।

ठेका नखरे उठाने का टेन्डर आमंत्रित है

एक प्रेमी जिसकी प्रेमिका के नखरे उठाते २ वह थक गया है ठेकेदारों से टेन्डर मांगता है।

कार्य—प्रेमिका के नखरे उठाने होगे, उसे घुमाने ले जाना होगा व सिनेमा दिखाना होगा।

अनुमानित राशि—३०००रुपये

जमानत-बस अपने जूते छोड़ जाइयें।

टेन्डर चाहिएं

मशहूर नेता घसीटा दास जी को समाज की बुराइयों पर भाषण देने के लिये आम सभा की जरूरत है। केवल वे ही ठेकेदार टेन्डर भेजें जो कम-से-कम एक लाख की भीड़ जुटा सकते हैं। हर पांचवे मिनट में तालियों की गड़गड़ाहट तथा घसीटा दास जी की जै के नारे लगने चाहिएं।

अनुमानित राशि—बीस लाख रुपये।

पेशगी जमानत--१०००० रुपये ब्लैक

निविदा आमन्त्रित हैं समाज के ठेकेदारों से

हम दो प्रेमी-प्रेमिका बनाम राजेश और रजनी हैं। घर वाले आधुनिक विचारों के हैं और हमारे मिलने तथा विवाह की पूरी छूट दे रहे है। हमें रोमान्स में कोई बाधा न होने के कारण पूरा मजा नहीं आ रहा है।

कार्य—ठेकेदार को हमारे प्रेम के मार्ग में रोड़े अटकाने होंगे। रीति रिवाजों की दीवार खड़ी करनी होगी। हमारे घर वालों को उकसाना होगा।

अनुमानित व्यय—२५०० रुपये

जमानत की राशि—पगड़ी।

श्रोता ठेकेदारी के टेन्डर चाहिएं

मेरी बीवी दिन रात किच-किच करती रहती है। ठेकेदार को दिन रात उसकी किच-किच सुनना और बीच २ में हां-हूं करना होगा। जम्हाई लेने पर पेनल्टी देनी होगी, ठेका हर वर्ष रिन्यू करना होगा।

अनुमानित राशि—१२०० रुपये वर्ष भर का

जमानत—५० रुपये पहले जमा कराने होंगे।

गाली-गलौच की ठेकेदारी के लिये महिला ठेकेदारों से टेन्डर मांगे जा रहे हैं

एक गृहणी जिसका स्वभाव लड़ाकू नहीं है अपनी ओर से पड़ौसिन से लड़ने के लिये महिला ठेकेदारों से टेन्डर मांगती है।

कार्य—पड़ौसिन की रोज सात पुश्तों तक की खबर लेनी होगी। एक मिनट में मुंह से कम-से-कम १०० शब्द निकलने चाहियें जिसमें ४०% अपशब्द हैं।

अनुमानितराशि—३६० रुपये एक वर्ष की अवधि के। चाय पकौड़े और पुराने कपड़े भी दिये जायेंगे।

बीबी के खाने की तारीफ करने के लिये ठेकेदारों से निविदायें आमंत्रित हैं

टेन्डर मांगने वाला व्यक्ति खाना खाते समय बात करने का न आदी है और न ही इसका समर्थक है। बीबी अपने बनाये खाने की तारीफ सुनने की शौकीन है।

कार्य—जब पति खाना खा रहा हो तो उसकी पीठ के पीछे से खाने की तारीफ करनी होगी। एक-एक व्यंजन की तारीफ में कसीदे काढ़ने होंगे। इतनी तारीफ की पत्नी की (आंखों से झर-झर आंसू बहने लगें।)

अनुमानित राशि—८०० रुपये-खाना मुफ्त मिला करेगा।

टेन्डर चाहिएं

एक कवि को ठेकेदारों से टेन्डरों की मांग है।

कार्य—कवि जब कवितायें सुनाये तो दाद देनी होगी। अश-अश और वाह-वाह की झड़ी लगानी होगी, तब तक जब तक कवि थक कर बेहोश हो कर गिर न पड़े।

अनुमानित व्यय—जो कुछ कवि के पास रुखा सूखा होगा आधा-आधा कर लेंगे।

टेन्डर नोटिस

एक ट्रेवल ऐजेंट ठेकेदारों से टेन्डर निमंत्रित करता है।

कार्य—ट्रेवल एजेन्ट के साथ यात्रा में साथ देना। उसे बोर न होने देना! ठेकेदार के पास प्रचुर मात्रा में किस्से, कहानियों तथा नये २ चुटकुलों का स्टॉक हो।

अनुमानित राशि—यात्रा खर्चे के अतिरिक्त ट्रेवल एजेन्ट की कमाई में १०% भाग।

जमानत—अपना राशन कार्ड।

टेन्डर की मांग

एक गप्पों की शौकीन महिला टेन्डर आमन्त्रित करती है महिला ठेकेदारों से

कार्य—हर रोज मुहल्ले और शहर के घरेलू खींचतान व झगड़ों की खबरें इकट्ठी कर सुनानी होंगी। सर्टिफाइड कुटनी ठेकेदारानियों को प्राथमिकता। मिर्च मसाला लगाने का पूर्व अनुभव जरूरी।

अनुमानित व्यय—चाय मट्ठी और तीस रुपये महीने के हिसाब से ठेका।

जमानत—पानदान या नाक की नथनी।

पृष्ठ ९ से आगे

उसने बताया.

वाकई मनीआर्डर फार्म में भेजने वाला का नाम के. एल. प्रसाद लिखा हुआ था. यानी किशोरी लाल प्रसाद इसमें धोखा खाने की गुंजाईश नहीं थी. इस लिए फार्म में हस्ताक्षर करवाने को मै तैयार हुआ.

पर इस वक्त दूसरा एन. एल. प्रसाद आ पहुंचा. आते ही उसने पूछा ''आप मुझे ढूंढ रहे थे.?''

''नहीं तो!''

''सुना है. मेरे नाम से मनीआर्डर आया है''

''नहीं, किन्तु मनीआर्डर तो इनके नाम से है. इन्हें मैं ढूंढ रहा था.'' मैं पहले एन. एल. प्रसाद की तरफ इशारा करके बोला.

दूसरा एन. एल. प्रसाद बोला 'सुना था. एन. एल. प्रसाद का नाम है. एन. एल. प्रसाद मेरा ही नाम है.

पल भर तक मैं चकराया सा आवाक रहा. फिर पूछा—''आप का पूरा नाम?''

उसने बताया—'नंद लाल प्रसाद.''

'अजीब मुसीबत.' मैं मन ही मन सोच में पड़ गया. एन. एल. प्रसाद का पूरा नाम नारायण लाल प्रसाद हो सकता है. नंद लाल प्रसाद भी हो सकता है. इस प्रकार कितने व्यक्तियों के नाम मिल सकते हैं. इसे सोच कर मैं ने भेजने वाले का नाम और ठिकाना पूछा—'मनीआर्डर कहां से आने वाला था?''

'पटना से''

''भेजने वाला का नाम?''

उसने बताया—'के. एल. प्रसाद अर्थात् कुंदन लाल प्रसाद.''

''आप के क्या लगते हैं?''

'वो मेरे बड़े भाई है.''

मनीआर्डर भेजने वाला का नाम एक. स्थान एक. पाने वाले का नाम एक आदमी दो. मेरी तो मति गुम हुई. लगा, डाकिया की नौकरी यहीं छोड़ दूं, दरअसल मनीआर्डर फार्म के मुताबिक रुपये पाने के हकदार दोनों ही थे. पर ऐसे कैसे दे देता? नौकरी का सवाल था.

मैं ने दोनों को बताया—'देखिये भेजने वाले का नाम पटना से के. एल. प्रसाद भी एक है. पाने वाले का नाम भी एन. एल. प्रसाद है. बताइये मनीआर्डर भेजने वाले में असली कौन है और नकली कौन नाम भी एक है. आप दोनों में से असली कौन है. और नकली कौन है? यह भगवान ही बताये.'

पहला एन. एल. प्रसाद बोला—'मनीआर्डर मेरा है.'' पहले का विरोध करते हुए दूसरा एन. एल. प्रसाद बोला—'इस का नहीं. मेरा मनीआर्डर है.''

'मेरा-मेरा' के साथ बात एकबारगी बढ़ गई. आपस में एक-दूसरे को झूठा, धोखे बाज, पाजी और क्या-क्या बेलज्जत जुमलों की बौछारें करने लगे. शोर सुन कर पड़ोसियों का हुजूम लग गया. पड़ोसियों को मैं ने अपनी सफाई बता दी. उन्हें मनीआर्डर फार्म भी दिखा दिया. इस उलझन पर पड़ोसी भी ठीक-ठीक राय दे न पाये.

आखिर समझौता करने के लिहाज से मुझे कहना पड़ा. 'मेरा क्या कसूर है. कसूर तो नाम लिखने वाले का है. माफ कीजिए रुपये आप दोनों में से किसी को भी नहीं मिलेंगे।'

मैं डाकघर की ओर चल पड़ा, और समस्या बताते हुए मैं ने मनीआर्डर फार्म और रुपये पोस्ट मास्टर को वापस कर दिये.

शाम को सुना कि दोनों एन. एल. प्रसाद अपने नाम के लिए कुश्तियां लड़ कर बेहद जख्मी हुए और अस्पताल में दाखिल किये गए.

— चैतन्य

फैण्टम-जंगल शहर

अंकल वाकर, आप रस्सेवाले लोगों को यहां क्यों लाये हैं?
जोन्स नलवाली
क्योंकि यह लोग ससार में सबसे बढ़िया वृक्ष घर बनानेवाले हैं
5/26

क्या डियाना को इसका पता है?
नहीं, यह उसके लिये एक अचम्भा ही होगा.
मावीटान में तुम कहां रहोगी डियाना?
मेरे पति हमारे लिये निकट ही कोई स्थान ढूंढ़ रहे हैं डा हेन्री

पासपोर्ट, वीसा, हेल्थ सर्टीफिकेट और टिकट सब इसमें है डियाना।
ओह! मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकती थी यह दिन आयेगा

डियाना तुम्हारे सहायक कर्मचारी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, वहां तुम्हें अधिक सहायक मिलेंगे
FALK & BARRY 5/27

मैं बहुत प्रसन्न हूं कि आप लोग मेरे साथ चल रहे हैं, आशा है आप भी बंगाला को मेरी तरह ही प्यार करने लगेंगे.
बायें से दायें डा. किर्क, मिस चान्ग, डा. सिंह, मिस इबोली, सर पांडिल्लो।

प्रियों . . . हम घर चल रहे हैं.
डा . . डा
मा . . मा.
हिलोईस का पहला शब्द मामा है किट का डाडा है. कितना उपयुक्त है।

गोगो . . .टोटू . . .हम घर चल रहे हैं.
घर !

हिलोईस . . . किट . . .दुबारा मैं इन्हें कब देख पाऊंगी (सुबकी)
शीघ्र ही, बहुत बार . . मामा

आफत ! इस समय केवल एक ही व्यक्ति मिलने आता है
करनल वोरुबू, कम्पनी, जंगल सुरक्षा !

करनल कल दो कारें नीचे दी सूचना के अनुसार एक वायुयान से यात्री लेने भेज देना !
जंगल सुरक्षा का गुमनाम कमान्डर

डियाना वहां पंहुचने पर तुम्हें तुम्हारे नये दफ़तर दिखा दिये जायेंगे जहां तुम इन्टरव्यू आरम्भ करना
FALK & BARRY 5/29
क्षमा कीजिये डा. हेनरी, पहुंचने पर पहले हम घर जायेंगे. अपने नये घर।

आशा है तुम्हारे रहस्यमय मि. वाकर मेरा तुम्हें बिदाई का चुम्बन लेने पर बुरा नहीं मानेंगे डियाना !
सब के लिये बहुत धन्यवाद डा. हेनरी
गुडबाई हिलोइस (सुबकी) गुडबाई फिर (सुबकी)
बाई बाई मा मा डा . . डा . .
ओह डेव ! इन लोगों को उस ठंडी भद्दी गुफा को वापिस जाते देख मुझे बहुत बुरा लग रहा है.
वे वहां बिलकुल ख़ुश रहेंगे लिली
©1980 King Features Syndicate Inc. World rights reserved
नहीं श्रीमती जी, वे जंगल की पिगमी हैं
क्या वे नर्सों के बच्चे है.
मिसेज़ डियाना पामर वाकर—मैं जंगल सुरक्षा का गोलांडा हूं मुझे आपको आपके निर्दिष्ट स्थान पर ले जाने का आदेश है.
ओह ! अरे . . . धन्यवाद. वह स्थान है कहां और 'वह' कहां है ?
मावीटाना हवाई अड्डा.
क्रमशः
चित्र वर्ग पहेली
शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें।
दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयी ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।
ा ी प म र ग र न न
य न ा स र ि क
य म ा ी क न त
स न ज ा म न
इनाम 10/- रुपये
उत्तरः—
होगा
रुस व अमरीका में आजकल तनाव चल रहा है। तनाव समाप्त शीघ्र नहीं होगा क्योंकि शीतयुद्ध होने के कारण यह . . .
अन्तिम तिथि - ६-३-८२
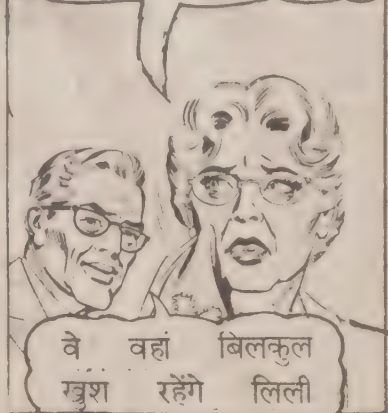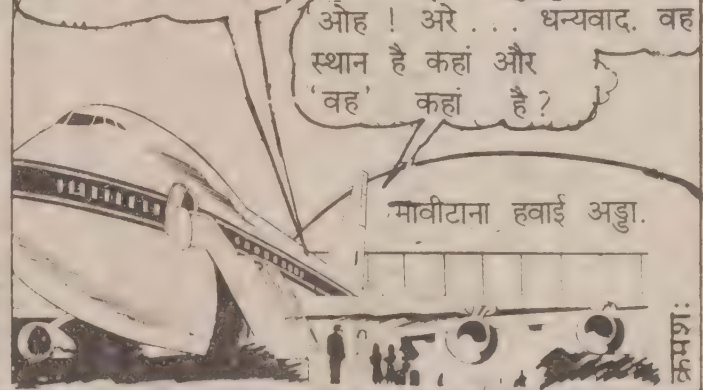
ज्यॉफ बॉयकॉट के रिकार्ड

23 दिसम्बर 1981 के भारत-इंगलैंड 1981-82 श्रृंखला के तीसरे टैस्ट मैच में पहले दिन इंगलैंड के ज्यॉफ बॉयकॉट ने विश्व में सर्वाधिक रन बनाने के सर गैरीसोबर्स के 8032 रनों के कीतिमान को पार कर एक नया कीतिमान स्थापित करने की दिशा में बढ़ चले। दिन का खेल समाप्त होने से केवल 10 मिनट पूर्व जब बॉयकॉट ने दिलीप दोषी की गेंद को सीमा रेखा के पार पहुँचाया तब वे 8032 रनों से आगे निकल गए। सर गैरी सोबर्स का 8032 रनों का रिकार्ड सात वर्ष और 262 दिनों तक अविजित रहा।

गैरी सोबर्स ने कीतिमान स्थापित करने में 160 पारियाँ 93 टैस्टों में खेलीं। उनकी आयु उस समय 37 वर्ष 251 दिन थी। बॉयकाट को सोबर्स का रिकार्ड तोड़ने के लिए 190 पारियाँ 107 टैस्ट मैचों में खेलनी पड़ीं। कीतिमान तोड़ते समय उनकी आयु 41 वर्ष 63 दिन थी। बॉयकाट ने अब तक 22 शतक बनाये हैं।

ज्यॉफ बॉयकाट का टैस्ट जीवन वास्तव में दो पीढ़ियों को जोड़ता है। वे 17 वर्ष से टैस्ट खेलते आ रहे हैं। आज के क्रिकेटर कपिलदेव व गोवर आदि तब स्कूल जाने ही लगे थे जब बॉयकाट ने टस्ट जीवन आरम्भ किया।

एक तुलना बॉयकाट व सोबर्स की

	बॉयकाट			सोबर्स		
रन	टैस्ट	पारियां	आयु वर्ष-दिन	टैस्ट	पारियां	आयु वर्ष-दिन
1000	16	27	25—78	17	29	21—216
2000	32	53	27—159	23	39	22—117
3000	44	76	30—82	33	55	24—134
4000	55	95	32—279	46	77	26—262
5000	66	115	36—313	56	95	30—8
6000	81	141	38—264	65	111	31—249
7000	94	165	39—317	79	138	34—239
8000	101	190	41—63	91	157	37—207

	बॉयकाट				सोबर्स			
देश विरुद्ध	टैस्ट	रन	औसत	शतक	टैस्ट	रन	औसत	शतक
इंगलैंड	—	—	—	—	36	3214	60·64	10
आस्ट्रेलिया	38	2945	47·50	7	19	1510	43·14	4
द० अफ्रीका	7	373	37·30	1	—	—	—	—
वेस्टइंडीज	29	2205	45·93	5	—	—	—	—
न्यूजीलैंड	15	916	38·16	2	12	404	23·76	1
भारत	12	1007	62·93	3	18	1920	83·17	8
पाकिस्तान	6	591	84·42	3	8	984	89·45	3

चना कुरमुरा

एक अभिनेता अपने जीवन की कथा सुना रहे थे—

बचपन में ही मुझे थियेटर से प्रेम हो गया था और मैंने जब भी मौका मिला नाटक देखना आरम्भ कर दिया। 'एक बात बेटे तुम कभी न करना'' मेरे पिता ने एक दिन मुझ से चेतावनी के रुप में कहा, 'कभी बाजारू औरतों के घरों में न जाना.''

स्वभाविक रुप से ही मैने प्रश्न किया ''आखिर क्यों?'' 'क्योंकि वहां तुम वे चीजें देखोगे जो तुम्हें देखनी नहीं चाहियें'' पिताजी ने उत्तर दिया और बात दिमाग में बैठ गयी—दूसरी बार जब भी मेरे पास कुछ पैसे एकत्रित हुए मैं सीधा एक कोठे पर पहुंच गया.

पिताजी ने ठीक ही कहा था, मैने वह कुछ देखा जो मुझे देखना नहीं चाहिये था—मेरे पिता।

●

'कुछ दिन पहले मैंने तुम्हें चांदनी चौक के चौराहे पर खड़े लड़कियों को आंख मिचकाते देखा था.''

'मै आंख नहीं मिचका रहा था वहां बहुत तेज हवा लगती है, और मेरी आंख में कुछ घुस गया था''

''और वही तुम्हारी कार में भी घुस गई थी.''

●

एक बार जहाज के कप्तान ने लौग बुक में लिखा, 'मेट आज पिये हुए था.'' जब मेट का नशा उतरा, वह बहुत परेशान और गुस्सा हुआ, उसने कप्तान की बहुत मिन्नत की कि वह रिकार्ड बदल दे, उसने यह भी कहा उसने पहले कभी भी पीकर अपने होश हवास नहीं खोये थे और वह आइन्दा भी कभी ऐसी भूल नहीं करेगा। परन्तु कप्तान ने कहा ''हम इस लौग में पूरा सत्य ही लिखते हैं''

अगले सप्ताह लौग मेट को लिखना था तथा उसने लिखा ''आज कप्तान होश में था।''

●

उच्च श्रेणी की एक छात्रा को पहली रात को सगाई की अंगूठी मिली थी, परन्तु अगले दिन स्कूल में उसकी किसी भी सहपाठिन ने उसकी अंगूठी नहीं देखी, इससे उसे बहुत बुरा लगा. कुछ देर पश्चात् जब सब छात्राएं क्लास में एकत्रित हो बैठी थीं तो वह अचानक उठ खड़ी हुई, और बोली ''ओह! यहां तो बहुत ही गरमी मेरे ख्याल में मैं अपनी अंगूठी उतार देती हूं।

●

मदहोश
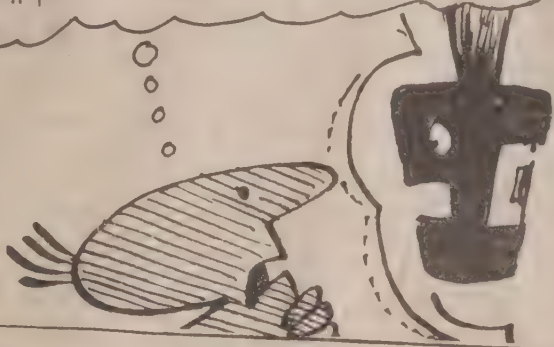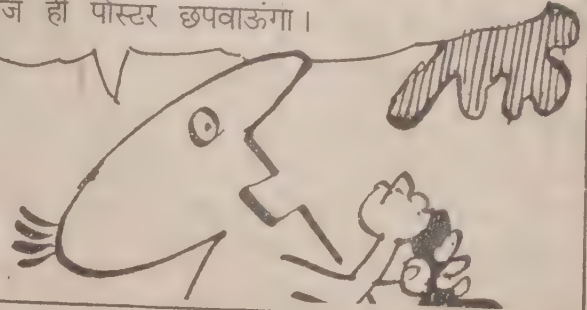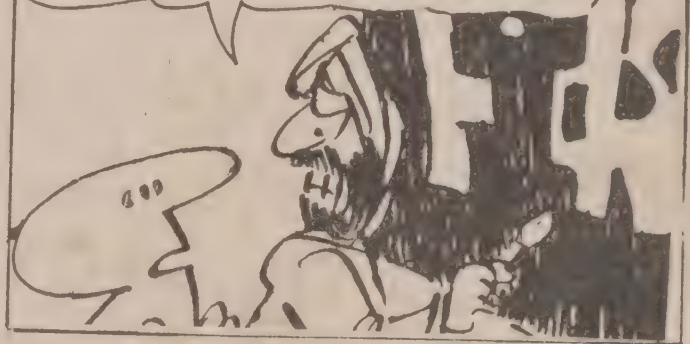
दीवाना के अंक १ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

स[1]	हा	रा[2]	■	पा[3]	क[4]
म	■	मं[5]	चं[6]	ल	ना
का[7]	ली	क	र	तू	त
ली	■	हा[8]	स	■	ल
न[9]	च्च[10]	नी	■	स[11]	गा
■	न	■	फ[12]	ब	ना

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता:—रामनिवास शर्मा द्वारा हिमोद्योग
माल रोड, सोलन-१७३२१२

दीवाना के अंक २ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

टा[1]	ट[2]	■	बे[3]	अं[4]	त[5]
ल[6]	क	वा[7]	■	घे[8]	ला
म[9]	स्सा	ले	दा	र	■
टो[10]	ल	■	■	न[11]	स[12]
ल	■	स[13]	मा[14]	ग	म
■	बे[15]	ह	त	री	न

(निर्णय लाटरी-द्वारा)

विजेता—एस. प्रभजोत सिंह
१९२-ए. शास्त्री नगर, मॉडल टाऊन
लुधियाना

पृष्ठ १७ से आगे
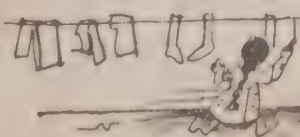
फिर किसी कबाड़ी ने उसे वहां से उठा कर अंकल माथुर को बेच दिया है, अंकल माथुर दाम ठीक होने पर कुछ भी खरीद लेते हैं उन्हें चीजों को सुधार कर ठीक करने के लिये हम पर भरोसा है सुधरी हुई वस्तुएँ अंकल आगे अच्छे दामों पर बेच लेते हैं।

'मैं तो तुम्हें इस ... का एक रुपया भी न दूं' महिन्दर बोला, घड़ी अच्छी दिखाई देती है यद्यपि अलार्म लगाने पर चीखती है, जरा सोचो सुबह सवेरे इस डरावनी चीख को सुनकर उठना कैसा लगेगा।

'हूँ' राजू ने सोचते हुए टिप्पणी की 'यदि तुम किसी तरह डराना चाहते हो तो, शायद इतना डराना हो कि उसकी जान ही निकल जाये तो, ऐसे में इस घड़ी को धोके से उनकी अलार्म घड़ी से रात को बदल दिया गया हो, तो सुबह को एकजान लेवा हार्ट अटैक ही सुनाई देगा, यह किसी की जान लेने का अनोखा प्लान हो सकता है'।

'अरे भगवान्' ! तुम्हारा ख्याल है किसी ने ऐसा किया होगा' ? श्याम ने पूछा।

मुझे इस विषय में कुछ भी मालूम नहीं, मैंने तो केवल सुझाया था कि ऐसा भी हो सकता है।चलो अब अंकल माथुर से पूछते हैं, क्या उन्हें याद है यह घड़ी उन्हें किसने दी थी।

और इसी के साथ राजू के साथ उसके दोनों मित्र उठकर कबाड़ी घर के अगले भाग में एक छोटे से कमरे में बने दफ्तर की ओर चल दिये। हंस और कुणाल दोनों हट्टे कट्टे कबाड़ी घर के मददगार इमारत बनाने के सामान की अच्छी तरह से संजो कर रख रहे थे और मिस्टर माथुर बड़ी बड़ी मूछों वाले छोटे कद के व्यक्ति कुछ पुराने फर्नीचर का निरीक्षण करने में व्यस्त थे।

'अच्छा लड़कों' उन्होंने तीनों लड़कों को अपनी ओर आते देखकर कहा,जब भी तुम्हें खर्चने को कुछ पैसों की जरुरत हों, यह कुछ फर्नीचर आ गया है जिसे ठीक ठाक और पेन्ट कर तुम मुझसे ले सकते हो।

'हम जल्दी ही इस काम में लग जायेंगे अंकल' राजू ने वादा किया, अभी तो हम इस घड़ी में दिलचस्पी रखते हैं, यह उसी छोटे-मोटे सामान के डिब्बे में थी जो आज सुबह आपने मुझे दिया था, क्या आपको याद है इसे आपको किसने दिया था ?'

'हूँ', माथुर साहब ने सोचते हुए जवाब दिया, 'यह मुझे किसी से मिली है, मैंने इसे खरीदा नहीं है, एक पुराना सामान इकट्ठा करने वाले ने इसे मुझे दिया था वह जामा मस्जिद के इलाके में रहता है, लोगों द्वारा फेंका बेकार सामान इकट्ठा कर उसे छाँट कर कुछ अच्छी चीजें बेच लेता है। तुम तो जानते ही हो लोग पुरानी बहुत सी चीजें तंग आकर फेंक देते हैं।

'क्या आप उसका नाम जानते हैं अंकल माथुर ? 'केवल उसका बोलता नाम टोनी ही जानता हूँ, हो सकता है वह अभी सुबह ही कुछ फर्नीचर और लेकर आ जाये, तब तुम उससे पूछ सकते हो'।

'लो कमाल हो गया, वह आ ही गया, नमस्ते टोनी।

नमस्कार माथुर मैं तुम्हारे लिये कुछ फर्नीचर लाया हूँ बिल्कुल नये जैसा ही है'।

'तुम्हारा मतलब प्राचीन कहलाने लायक पुराना नहीं हैं, चलो तुम्हें फर्नीचर देखे बिना ही सौ रुपये देता हूं'।

'उधर दफ्तर के पीछे की ओर पहले राजू तुमसे कुछ पूछना चाहता है।'

'जरूर,जरूर,बोलो लड़के'।

'हम कुछ सामान का पता लगा रहे हैं यह सामान एक डिब्बे में आपने अंकल को दिया था', राजू बोला 'उसी में से एक यह घड़ी भी थी. शायद आपको ध्यान हो आपने यह कहाँ से ली थी ?

'घड़ी', टोनी मुस्कराया,मैं हफ्ते में बीसों घड़ी उठाता हूं, ज्यादातर को ती फेंक देता हू घड़ी तो मुझे याद नहीं आ रही' 'उसी डिब्बे में एक परों से भरा हुआ उल्लू भी था। श्याम बोला, हो सकता हैं आपको उल्लू का ध्यान हो।'

'उल्लू ! उल्लू ! हाँ इससे कुछ ख्याल आ रहा है ज्यादा उल्लू इत्यादि मैं नहीं उठाता, कोशिश करता हूं, शायद याद आ जाये'

"उल्लू, अफसोस है लड़कों यह डिब्बा मैंने किसी घर के पिछवाड़े से लगभग दो हफ्ते पहले उठाया था ठीक याद नहीं, कौन सा स्थान था, माफ करना हर समय यही काम करने के कारण ध्यान नहीं है।'

राजू को सुराग मिलना।

"यह एक ऐसा रहस्य था। जिस-की पूछताछ शुरू होने से पहले ही समाप्त हो गई', महिन्दर बोला क्योंकि हमें घड़ी कहाँ से आई है मालूम नहीं हो सकता—अब मेरी समझ में नहीं आ रहा राजू तुम क्या कर रहे हो?''

तीनों लड़के वर्कशाप में वापिस आ चुके थे और राजू घड़ी वाली खाली पेटी को हाथ में लिए उलटा-पलटा रहा था।

कभी-कभी डिब्बों पर भी घर का पता लिखा रहता है वह पता जिसपर कभी वह पहुँचाया गया होगा", राजू बोला "यह कोई राशन की दुकान का पुराना डिब्बा दिखायी दे रहा है" श्याम ने जोड़ा।

"तुम ठीक कह रहे हो, इस पर कोई पता नहीं है"।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा, श्याम तुम इस रहस्य के विषय में क्या कर रहे हो ! महिन्दर बोला।

श्याम उड़ कर नीचे गिरा एक चौकोर कागज का टुकड़ा उठा रहा था।

"यह कागज डिब्बे में से गिरा था, इस पर कुछ लिखा हुआ है," उसने राजू से कहा।

शायद कोई राशन के सामान की लिस्ट होगी,'' महिन्दर बोला और वह श्याम के करीब आ गया। कागज पर कुछ ही शब्द लिखे थे जिन्हें राजू ने जोर से पढ़ा।

प्यारे राजा—
इला से पूछो,
गोवर्धन से पूछो,
मीरा से पूछो।

फिर अमल करो! नतीजा देखकर तुम भी हैरान हो जाओगे।

'ओह राम! इसका क्या अर्थ है? श्याम बोला।

'गोवर्धन से पूछो' महिन्दर बोला 'इला से पूछो'।

"मेरा ख्याल है, यह सब घड़ी के रहस्य से ही सम्बन्धित हैं" राजू बोला।

'ऐसा तुम कैसे कह सकते हो, श्याम ने पूछा, यह तो पेटी में से गिरा कागज का एक पुर्जा भर है, हमें कैसे मालूम इसका सम्बन्ध घड़ी से है।"

मैं सोचता हूँ सम्बन्ध है, कागज को ध्यान से देखो, इसे कैंची से काट कर एक खास नाप का लगभग दो इंच चौडा और चार इंच लम्बा काटा गया है, अब इसके पीछे के हिस्से को देखो, क्या दिखाई दे रहा है?"

"कुछ सूखी गोंद सी दिखाई दे रही है' श्याम बोला—

"बिलकुल ठीक, इसे कहीं चिपकाया हुआ था, अब घड़ी देखते हैं, इसके निचले हिस्से में कागज लायक ही स्थान हैं। इसमें कागज रखने से फिट बैठ रहा है। घड़ी के नीचे के स्थान पर उँगली फेरने से कुछ खुरदरा सा महसूस होता है। और मेरा अनुमान है, वह भी सूखी गोंद ही है, और उत्तर स्पष्ट है। पर कागज का टुकड़ा आरम्भ में घड़ी के निचले भाग पर चिपका हुआ था और डिब्बे में घड़ी इधर उधर हिलने से छटकर उसमें गिर गया।

क्रमशः

तन्मय द्विवेदी, 620उपरैन-गंज जबलपुर, 14 वर्ष, तैरना, अखाड़े जाना, पढ़ना, कार चलाना।

राजपाल 'मिथुन', 443, घोंडा, दिल्ली 53, 19 वर्ष, डांस करना, फिल्में देखना।

वेद प्रकाश 'जेब्रा' 444, घोंडा, दिल्ली 53, 17 वर्ष, चित्र बनाना व फिल्में एकत्र करना।

उदयशंकर मेहता, रोहतास (बिहार), 16 वर्ष, गाना गाना, प्रेम-पत्र लिखना और दीवाना पढ़ना।

सुधीर अरोरा, 60 द्वारका पुरी, मुजफ्फर नगर(यू०पी०) 18 वर्ष, दोस्ती करना, पुस्तक पढ़ना।
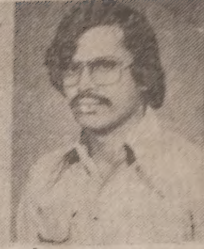
शब्बीर अहमद अण्यार, 286, नया बाजार खडकी, पूना, 22 वर्ष, पत्र-मित्रता, गजलें सुनाना।

प्रिन्स ... हर ... मार्केट ... जूडो-क...

महमद सलीम एंड पीपरागी खारा कुआं, राजपुर, डीसा (गुजरात), 15 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

मुमताज अली हीरणबाज, फड़ बाजार, बीकानेर(राज) 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, गजलों की हिन्दी करना।

मुकेश रावलानी (मैक) 190/ए श्यामसदन भुलेश्वर बम्बई-4, 21 वर्ष, पेंटिंग, पत्र-मित्रता।

प्रचण्ड रत्न बज्राचार्य, 11/753 ठहिजो, भबाबहा काठमाण्डो, नेपाल, 13 वर्ष किताब पढ़ना।

दीन दयाल शर्मा 'पत्रकार' रावतसर,श्रीगंगानगर(राज) 21 वर्ष, आकाशवाणी में हास्य प्रोग्राम देना।

शिवजी वर्मा, 438/5 भोलनाथ नगर, शहदरा दिल्ली-32, 22 वर्ष, शतरंज, पत्र-मित्रता।

नन्द ... भोलान... दिल्ली-... पत्र-मि...

राजेन्द्र कुमार कश्यप, 1256, सुभाष रोड, गांधी नगर दिल्ली-31, 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना, घूमना।

दीपक चक्रवर्ती, ई० एस० आई० एम० अग्रवाल, सर्वोदय नगर, कानपुर, 16 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

एम० ए० हमीद खुरेशी, 22-1-112 दारुशफा जाम बाग, हैदराबाद, 13 वर्ष, पत्र-मित्रता।

के० वी० पप्पी, राना भवन, जींद, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना, फरमाईश। भेजना, खेलना।

योगेन्द्र नाग 'रांकी', नेहरू हास्टल, नया पारा, जगदल पुर (म०प्र०), 15 वर्ष, पत्र-मित्रता।

राकेश कुमार, म०न० 42 साईदास कालोनी, रोहतक, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता।

सैयद त... नल ... गिरिडि... त्रिकेट,...

विपिन कुमार कक्कड़, 183 माधो कालोनी, मु० नगर, 16 वर्ष, संगीत व पढ़ना। एवं खेलना।

प्रवीन जैन, राजकीय महा-विद्यालय सिरसा, 17 वर्ष, गीत सुनना, क्रिकेट खेलना, उपन्यास पढ़ना।

अमरजीत सिंह 'रंगीला', कुमारधूबी गुरुद्वारा धनबाद (बिहार),18 वर्ष, कवितायें-कहानियां लिखना।

उमेश कुमार सावरकर, उमेश हार्डवेयर मर्चेन्ट गोल बाजार, रायपुर, 16 वर्ष, शायरी करना।
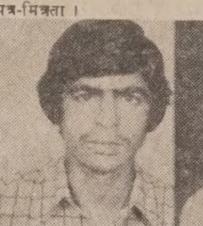
पवन कुमार बजाज, 618 डी 2 रेलवे कालोनी न०7, लुधियाना, 18 वर्ष क्रिकेट, टिकट-संग्रह, दीवाना पढ़ना।

संदीप कुमार सिंह (पप्पू), उत्तर रेलवे, फैजाबाद, 14 वर्ष, क्रिकेट, फुटबाल खेलना।

सरफरा... 5, ल... 22 वर्ष... देखना,...

गोविन्द शरण शर्मा, सदर बाजार करौली, सवाईमाधो-पुर, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पत्रिकायें पढ़ना।

राजेश शर्मा, लोर बाजार द माल, सोलन, 17 वर्ष, सिनेमा देखना, घूमना पुस्तक पढ़ना।
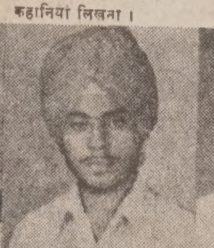
जसविन्द्र वर्ई, 52, भाडोन हाउस, लुधियाना, 21 वर्ष, पत्रिकायें और जासूसी उपन्यास पढ़ना।
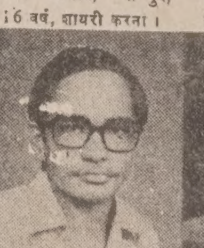
सुनील कुमार सेठिया, सुनील स्टोर फैन्सी बाजार गोहाटी(आसाम), 18 वर्ष, फिल्म देखना।

बी० के० शाही, फूलचन्द साह मिडल स्कूल रक्सौल (चम्पारण), 14 वर्ष, पत्र-मित्रता।

हेम आनन्द, एच 7 पुराना गोविन्दपुरा, परवाना रोड दिल्ली-51, 21 वर्ष, फोटो ग्राफी, पत्र-मित्रता।

शंकरल... लाइब्रे... पास ब... पत्र-मि...

राजकुमार स्वामी, बजरंग टेक्सटाइल गोहाटी(आसाम) 15 वर्ष, चित्रकला।

आदित्य जयपति 'अघुर' जी-14 लोयर्स कालोनी आगरा-5 21 वर्ष

अजय गंगराडे, ज्योति नगर कालोनी, उज्जैन, 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना

मूलचन्द केशवानी, अनमोल बेकरी आर्यनगर, गोरखपुर 16 वर्ष, सिनेमा देखना,

बादल शेख, गार्डन हाउस नैनीताल, 16 वर्ष, एक्टिंग करना दीवाना पढ़ना

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२. कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ________________

पता ________________

____

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम मे अपना फोटो छपवाइए। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

जरूरत है

इस गली की लड़कियों को आशिकों की

अपनी अदायें दिखाते हुये गली का चक्कर लगाइये।

हाज़मा ठीक कीजिये

अपने काले धन से स्पैशल बियरर बांड लीजिये।

पैसा हजम हो जायेगा

R.N. 10598/65 Regd. No. D(DN)-275

3200 ~~~

५०% बचाइये

दो की ज़रूरत हो तों
सिर्फ़ एक ख़रीदिए

कॅम्लिन की 'अन्ब्रेकेबल' पेंसिल ज़्यादा दिन चलती है।

खूब अच्छी तरह कॉम्प्रेस्ड् की गयी लेड और सावधानीपूर्वक अनुकूल की गयी लकड़ी दोनों को एक विशेष प्रक्रिया द्वारा एक-दूसरे से जोड़ दिया गया है। यह प्रक्रिया स्वयं कॅम्लिन की अपनी बनायी हुई है। इसके कारण पैंसिल टूटती नहीं। नोक आसानी से बन जाती है। आपको ऐसी पैंसिल मिलती है जो दूसरी पैंसिलों से दुगनी चलती है। अब कॅम्लिन की 'अन्ब्रेकेबल' पैंसिलों पर एक विशेष निशान होता है, ताकि आप इन्हें आसानी से पहचान ले। जब भी आप पैंसिले ख़रीदें इस-निशान का ध्यान रखें और पैसे बचायें।

इन नामो को ध्यान में रखिए जो आपके लिए अच्छी क्वालिटी की गारंटी हैं।

त्रिवेणी, सुप्रीम, एक्सेला, रीगल

कॅम्लिन

अन्ब्रेकेबल' पेंसिलें

कॅम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिवीज़न.
बम्बई ४०० ०५९

कॅमल आर्ट मटीरीयल बनाने वालों की देन

VISION/795/R/HIN